देवनागरी उर्दू

Version 2026

تَعلِيمُ الكَلام
لِأَنَّ اللهَ هٰكَذَا
أَحَبَّ الْعَالَمَ حَتَّى بَذَلَ
اِبْنَهُ الْوَحِيدَ لِكَيْ لَا يَهْلِكَ
كُلُّ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ بَلْ تَكُونَ
لَهُ الْحَيَاةُ الأَبَدِيَّةُ.
(يوحنا ٣:١٦)

फेहरिस्त

नजात का पैग़ाम...4

हज़रत ईसा अल-मसीह की पाँच बातें

हज़रत ईसा अल-मसीह की ख़ास पैदाइश.......................................6

हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास मौजिज़ात....................................8

हज़रत ईसा अल-मसीह की ख़ास तालीमात...................................10

हज़रत ईसा अल-मसीह की ख़ास क़ुर्बानी....................................12

हज़रत ईसा अल-मसीह का दोबारा ज़िन्दा होना...............................15

हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम

हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम का खुलासा............................17

हज़रत ईसा अल-मसीह का पहला हुक्म यानी तौबा करना और ईमान लाना..........19

खुदावंद ईसा अल-मसीह का दूसरा हुक्म यानी पाक गुस्ल लेना जिसे बपतिस्मा लेना भी कहा जाता है। 21

खुदावंद ईसा अल-मसीह का तीसरा हुक्म यानी दुआ करना।.........................24

खुदावंद ईसा अल-मसीह का चौथा हुक्म, इंजील शरीफ सीखना यानी किताब-ए-मुकद्दस सीखना।..........27

खुदावंद ईसा अल-मसीह का पाँचवा हुक्म, जाओ और तमाम कौमों को शागिर्द बनाओ।..........30

खुदावंद ईसा अल-मसीह का छटाँ हुक्म, अपने पड़ोसी से वैसी ही मौहब्बत रखें जैसे अपने आपसे रखते हैं।..........35

खुदावंद ईसा अल-मसीह का सातवाँ हुक्म, इशा-ए-रब्बानी।.........................38

खुदावंद ईसा अल-मसीह का आठवाँ हुक्म, दिल से देना यानी ज़कात देना।..........41

जमात कैसे और क्यों कायम करना ज़रूरी है?...................................43

इल्म-ए-दीनियात

इंजील शरीफ में कोई तब्दीली यानी बदलाव नहीं हुआ।............................46

इंजील-ए-शरीफ़ की तारीख़...48

सबक़ – 1

नजात का पैग़ाम

शुरू में, अल्लाह ताला ने आसमान और ज़मीन को बनाया। जो कुछ भी हम दुनिया में देखते हैं, सब कुछ ख़ुदा ने बनाया। आख़िर में, ख़ुदा ने हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और उनकी बीवी हव्वा (अलहिस्सलाम) को पैदा किया। ख़ुदा ने उन्हें एक ख़ूबसूरत बाग़ में रखा, और वहाँ की सारी चीज़ों पर उन्हें इख़्तियार दिया।

लेकिन ख़ुदा ने साथ में एक हुक्म भी दिया। उस ने फ़रमाया:
"लेकिन नेक ओ बद की पहचान के दरख़्त का फल न खाना क्योंकि जिस दिन तू उसे खाएगा तू ज़रूर मरेगा।"

मगर हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और उनकी बीवी ने क्या किया? उन्होंने उसी दरख़्त का फल खाया, और अल्लाह के हुक्म को तोड़ दिया। बस, इसी एक नाफ़रमानी की वजह से, उनका रिश्ता अल्लाह से टूट गया। अगर हमारे दिल में एक भी गुनाह हो, तो हम ख़ुदा के हुज़ूर नहीं जा सकते। जैसे हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) ने गुनाह किया, वैसे ही हम सब भी गुनहगार हैं। हर इंसान के अंदर यही मसला है — गुनाह, जो हमें अल्लाह के क़रीब जाने से रोकता है।

एक मिसाल देखिए: एक पानी की बोतल है। अगर वो पानी साफ़ है, तो हम उसे पी सकते हैं। लेकिन अगर कोई उसमें सिर्फ़ एक बूँद शराब डाल दे, तो क्या यह पानी पीने के लायक रहेगा? नहीं! सिर्फ़ एक बूँद नापाक चीज़ पूरे पानी को नापाक बना देती है। उसी तरह, अगर हम पाक हों, तो सिर्फ़ एक गुनाह हमें नापाक कर देता है। और जो चीज़ नापाक हो, क्या वो जन्नत में जा सकती है? हरगिज़ नहीं। क्या वो अल्लाह की पाक हुज़ूरी में जा सकती है? नहीं जा सकती। तो फिर सवाल यह है: अगर हम गुनहगार हैं, तो ख़ुदा के पास कैसे जा सकते हैं?

इसके लिए हम हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिसाल देखते हैं, जिन्हें ख़लीलुल्लाह कहा जाता है। ख़ुदा ने उन्हें हुक्म दिया कि वो अपने बेटे की क़ुरबानी पेश करें। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने ख़ुदा का हुक्म सुना, और उस पर अमल करते हुए अपने बेटे की क़ुरबानी के लिए तैयार हो गए। लेकिन बिलकुल आख़िरी वक़्त पर, अल्लाह ने उन्हें रोक दिया, और एक जानवर दिया ताकि वो अपने बेटे की जगह क़ुरबानी दें। तो सवाल यह है कि क़ुरबानी क्यों दी जाती है? इसका मक़सद क्या है? अक्सर लोग इसका सीधा जवाब नहीं दे पाते। लेकिन अगर हम ख़ुदा के दूसरे नबियों को देखें, तो उन्होंने भी क़ुरबानी दी।

हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम), हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम), हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) — सब ने क़ुरबानी दी। तौरेत शरीफ़ में हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़रिए बताया गया कि जब इंसान गुनाह करे, तो उसे अपने गुनाहों के लिए क़ुरबानी देनी चाहिए। एक जगह अल्लाह का कलाम कहता है: **"और ख़ून बहाए बग़ैर माफ़ी नहीं होती।"**

इसी लिए सब पैग़म्बर क़ुरबानी देते थे — ताकि गुनाह माफ़ हों। लेकिन यहाँ एक मसला है। आज कल के ज़माने में गुनाह आम बात है। हम अपनी ज़िंदगी देखें, तो हम भी अल्लाह के हुक्म तोड़ते हैं। क्या साल में एक क़ुरबानी काफ़ी है? जी नहीं!

इसी लिए ख़ुदा ने और पैग़म्बर भेजे, जिन्होंने एक मसीह के आने की ख़बर दी — जो एक ही दफ़ा एक कामिल क़ुरबानी देगा। पैग़म्बरों ने बताया कि मसीह की क़ुरबानी पूरी दुनिया के गुनाहों के लिए काफ़ी होगी। फिर एक दिन, हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) आसमान से आए, और हज़रत मरयम (अलैहस्सलाम) को पैग़ाम दिया:
"'तू उम्मीद से हो कर एक बेटे को जनम देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात देने वाला) रखना है।'"

हज़रत मरयम (अलैहिस्सलाम) ने हैरानी से पूछा:
"यह क्योंकर हो सकता है? अभी तो मैं कुँवारी हूँ।"
हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया:
"रूहुल क़ुद्दुस तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इस लिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा।"

और जैसे जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने बताया था, वैसे ही हुआ। क्या किसी और नबी की पैदाइश इतनी ख़ास थी? क्या फ़रिश्तों ने किसी और के पैदा होने की ख़बर दी? क्या कोई और नबी बग़ैर बाप के पैदा हुआ? हज़रत ईसा अल-मसीह अपने मोजिज़ों के लिए भी मशहूर हैं। उन्होंने बीमारों को ठीक किया, मुर्दों को ज़िंदा किया, एक मर्तबा पानी पर चले। एक दफ़ा सिर्फ़ पाँच रोटियों और दो मछलियों से पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाया। क्या कोई और नबी ऐसे ताक़तवर मोजिज़े कर सका?

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी, उनके मोजिज़े ख़ास थे, उनकी तालीम भी ख़ास थी। हर नबी ने फ़रमाया:
"यह अल्लाह का रास्ता है, इस पर चलो।"
लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया:
"राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।"
दूसरे पैग़म्बर सिर्फ़ रास्ता दिखाते थे, लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह ख़ुद रास्ता बन गए।
सबसे ख़ास बात यह है कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों के लिए अपनी जान क़ुरबान की। एक कामिल क़ुरबानी। बग़ैर किसी दाग़ के। उन्होंने हमारे लिए सलीब पर अपनी जान दी। और क्या आपको मालूम है? तीन दिन बाद, वो फिर ज़िंदा हो गए! क्या आपने कभी किसी को देखा है जो तीन दिन क़ब्र में रहा हो, और फिर ज़िंदा हो गया हो?

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी। उनके मोजिज़े ख़ास थे। उनका कलाम ख़ास था। उनकी मौत ख़ास थी। और उनका ज़िंदा होना सबसे ख़ास था। अब वो कहाँ हैं? वो आसमान पर हैं, अल्लाह के हुज़ूर। बाक़ी सब नबी, उस्ताद, और रूहानी रहनुमा अब भी क़ब्र में हैं। लोग उनकी क़ब्रें आज भी देखने जाते हैं। लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह की क़ब्र ख़ाली है — क्योंकि वो ज़िंदा हो कर जन्नत चले गए।

एक वक़्त मुक़र्रर है — क़ियामत से पहले का वक़्त। उस वक़्त हज़रत ईसा अल-मसीह वापस आएँगे, और सब लोगों का इंसाफ़ करेंगे। हमें उस वक़्त के लिए तैयार रहना चाहिए। और तैयारी का रास्ता यह है: हम अपने गुनाहों से तौबा करें, हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाएँ, और उनके शागिर्द बन जाएँ। जो ऐसा करेगा, वो क़ियामत के दिन के लिए तैयार होगा। जो नहीं करेगा, वो दोज़ख़ की आग में जाएगा। आज हमारे सामने यह पैग़ाम है। यह फ़ैसला आज लेना है।

सबक – 2

हज़रत ईसा अल-मसीह की ख़ास पैदाइश

पिछले सबक में, मैंने आप को हज़रत ईसा अल-मसीह का वाक़िआ सुनाया। याद रखिए, हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी। वो एक कुंवारी औरत से पैदा हुए। फ़रिश्ते भी आए, और उन की पैदाइश का ऐलान किया। क्या किसी और नबी की पैदाइश इतनी ख़ास थी?

हज़रत ईसा अल-मसीह के मोजिज़ात भी बहुत ख़ास थे। उन्हों ने बीमारों को ठीक किया, मुर्दों को ज़िंदा किया। एक मर्तबा हज़रत ईसा अल-मसीह ने सिर्फ़ पाँच रोटी और दो मछलियों से पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाया! क्या किसी और नबी ने इतने बड़े मोजिज़ात दिखाए?

हज़रत ईसा अलमसीह की तालीम भी लाजवाब थी। उन्हों ने फ़रमाया:

"राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।"

तो हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी, उन्हों ने बड़े मोजिज़ात दिखाए, और उन की तालीम बेमिसाल थी। मगर इन सब से भी ज़्यादा ख़ास बात यह है कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों की माफ़ी के लिए अपनी जान की क़ुर्बानी दी। उन्हें दफ़्न किया गया, और तीन दिन बाद वो दोबारा ज़िंदा हो गए। वो क़ब्र से निकल कर जन्नत चले गए! आज हज़रत ईसा अल-मसीह जन्नत में हैं, और क़ियामत के दिन से पहले वो दोबारा आएंगे।

आज मैं हज़रत ईसा अल-मसीह की ख़ास पैदाइश के बारे में इंजील शरीफ़ का एक हिस्सा आप को सुनाना चाहता हूँ। मत्ती के पहले हिस्से में इंजील शरीफ़ के अंदर उनकी मोजिज़ाना पैदाइश लिखी गई है।

<u>इंजील-ए-मत्ती (1:18-25)</u>

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश यूं हुई:

उस वक़्त उस की माँ मरियम की मँगनी यूसुफ़ के साथ हो चुकी थी कि वह रूहुल-क़ुद्स से हामिला पाई गई। अभी उनकी शादी नहीं हुई थी।

उसका मंगेतर यूसुफ़ रास्तबाज़ था, वह अलानिया मरियम को बदनाम नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने ख़ामोशी से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर लिया।

वह इस बात पर अभी ग़ौरो-फ़िकर कर ही रहा था कि रब का फ़रिश्ता ख़ाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, "यूसुफ़ बिन दाऊद, मरियम से शादी करके उसे अपने घर ले आने से मत डर, क्योंकि पैदा होनेवाला बच्चा रूहुल-क़ुद्स से है।

उसके बेटा होगा और उसका नाम ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क़ौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा।"

यह सब कुछ इसलिए हुआ ताकि रब की वह बात पूरी हो जाए जो उसने अपने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी,

“देखो एक कुँवारी हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे।” (इम्मानुएल का मतलब ‘ख़ुदा हमारे साथ’ है।)

जब यूसुफ़ जाग उठा तो उसने रब के फ़रिश्ते के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी कर ली और उसे अपने घर ले गया।

लेकिन जब तक उसके बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से हमबिसतर न हुआ। और यूसुफ़ ने बच्चे का नाम ईसा रखा।

अब, मैं आप को इस वाक़िए के चार अहम बातें बताता हूँ, जो हज़रत ईसा अलमसीह के बारे में सिखाई जाती हैं:

पहली बात:

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश का पैग़ाम पैग़म्बरों ने पहले से दिया था। जैसे हज़रत यशाया (अलैहिस्सलाम) ने हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश से सात सौ साल पहले फ़रमाया:

“देखो एक कुँवारी हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे।” (इम्मानुएल का मतलब ‘ख़ुदा हमारे साथ’ है।)

दूसरी बात:

हज़रत जिबरील (अलैहिस्सलाम) ने हज़रत मरियम अलैहस्सलाम को उन की पैदाइश के बारे में बताया। और यूसुफ़ को भी एक फ़रिश्ते ने ख़्वाब में आकर सब कुछ बताया। इंजील शरीफ़ में लिखा है कि फ़रिश्तों की कई फौज आई और चरवाहों को हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश की ख़ुशख़बरी सुनाई। ये सब इस बात का सबूत है कि हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश बहुत ख़ास थी।

तीसरी बात:

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश सब से अलग थी, क्यों कि वो एक कुंवारी माँ से पैदा हुए। हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से ले कर हज़रत ईसा अल-मसीह तक हर शख़्स बाप के ज़रिए पैदा होता रहा है। मगर हज़रत ईसा अल-मसीह अल्लाह की रूह से, एक कुंवारी से पैदा हुए — बग़ैर किसी बाप के। इसी वजह से वो बिल्कुल पाक थे, उन में कोई गुनाह नहीं था।

चौथी बात:

फ़रिश्ते ने यूसुफ़ से कहा: **“इस का नाम ईसा रखना, क्यों कि वो अपनी क़ौम को उन के गुनाहों से रिहाई देगा।”**

गुनाहों से निजात देना हज़रत ईसा अल-मसीह का मक़सद था। इंजील शरीफ़ के मुताबिक़:
“सब ने गुनाह किया, सब अल्लाह के जलाल से महरूम हैं।”

मगर हज़रत ईसा अल-मसीह के अंदर कोई गुनाह नहीं था, इसलिए उन्हों ने हमारे लिए अपनी जान सलीब पर क़ुर्बान की — ताकि हमारे गुनाह माफ़ हो सकें। उम्मीद करता हूँ कि आज आप ने इंजील शरीफ़ की ताक़त को समझा होगा। हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश वाक़ई सब से ख़ास थी। वो आप को आज भी पुकार रहे हैं ताकि आप उन के शागिर्द बन जाएं।

क्या आप उन का रास्ता इख़्तियार करने के लिए तैयार हैं?

सबक – 3

हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास मौजिज़ात

पिछले सबक़ में, मैंने हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश का वाक़िया सुनाया, जो इंजील शरीफ़ में लिखा है। बहुत सारे पैग़म्बरों ने पहले से बताया था कि हज़रत ईसा अल-मसीह पैदा होंगे। फ़रिश्ते भी आए और हज़रत मरियम (अलैहस्सलाम) और दूसरे लोगों को इस बात की ख़बर दी। हज़रत ईसा अल-मसीह एक कुंवारी औरत से पैदा हुए थे। वह दुनिया में इसलिए आए कि हमारे गुनाहों की क़ुर्बानी बन कर हमें बचाएँ। उन्होंने अपनी जान क़ुर्बान की। क्या किसी दूसरे नबी की पैदाइश इतनि ख़ास थी?

आज हम हज़रत ईसा अल-मसीह के मौजिज़ात के बारे में बात करेगें। उन्होंने बीमार लोगों को ठीक किया। उन्होंने मुर्दों को ज़िंदा किया। एक बार तूफ़ान को रोका। एक बार पानी पर भी चले। क्या किसी और नबी ने इतने मौजिज़े दिखाए?

हज़रत ईसा अल-मसीह की तालीम भी बहुत ख़ास थी। उन्होंने फ़रमाया:

"राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर ख़ुदा बाप के पास नहीं आ सकता।"

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी, उन्होंने अज़ीम मौजिज़े किए, और उनकी तालीम भी ज़बरदस्त थी। लेकिन सब से बड़ी बात यह थी कि उन्होंने अपनी जान क़ुर्बान की, ताकि हमारे गुनाह माफ़ हो सकें। उन्हें दफ़्न किया गया, लेकिन तीन दिन बाद वह दोबारा ज़िंदा हुए। वह क़ब्र से ज़िंदा निकल आए, और जन्नत में चले गए। अब वह क़यामत के दिन तक वही क़याम करेंगे।

आज हम इंजील शरीफ़ का वो हिस्सा सुनेंगे जो हज़रत ईसा अल-मसीह के एक और मौजिज़े को बयान करता है। मगर उससे पहले, मैं एक सवाल मालूम करना चाहता हूँ कि

कौन गुनाह माफ़ कर सकता है?

उम्मीद है कि आपका जवाब होगा: **"सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह माफ़ कर सकता है।"**

चलिए, अब हम इंजील-ए-मत्ती (9:1-8) से

कश्ती में बैठकर ईसा ने झील को पार किया और अपने शहर पहुँच गया।

वहाँ एक लक़वे के मरीज़ को चारपाई पर डालकर उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर ईसा ने कहा, "बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।"

यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने लगे, "यह कुफ़्र बक रहा है!"

ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा,

"तुम दिल में बुरी बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मरीज़ से यह कहना ज़्यादा आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि 'उठ और चल-फिर?'

लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।" यह कहकर वह लक़वे के मरीज़ से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।"

वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला गया।

यह देखकर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हो गया और वह अल्लाह की तमजीद करने लगे कि उसने इनसान को इस क़िस्म का इख़्तियार दिया है।

यह वाक़िआ हमें हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में चार अहम बातें सिखाता है:

पहली बात: हज़रत ईसा अल-मसीह ने लक़वे के मरीज़ को ठीक किया। उनकी ज़िंदगी में हमेशा बीमार लोग ठीक होते रहे। वह लोग जो लक़वे के मरीज़ के दोस्त थे, उन्होंने समझा कि सिर्फ़ हज़रत ईसा अल-मसीह उनका मददगार है। इसलिए वह अपने दोस्त को चारपाई पर उठा कर लाए। हज़रत ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया: "उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।" आदमी उठा और चला गया। आज भी जब हम किसी मुश्किल में हों, तो हमें हज़रत ईसा अल-मसीह के पास जाना चाहिए।

दूसरी बात: हज़रत ईसा अल-मसीह गुनाहगारों से मौहब्बत करते हैं। वह लक़वे के मरीज़ को जानते थे कि वह गुनाहगार है, फिर भी उसे "बेटा" कहा। हज़रत ईसा अल-मसीह उन लोगों के दोस्त हैं जो अल्लाह से दूर हैं। आप अगर आज अल्लाह से दूर हैं, तो जानिए कि हज़रत ईसा अल-मसीह आप को अपने पास बुला रहे हैं। इंजील शरीफ़ में, रोमियों की किताब के बाब पाँच की आयत आठ में लिखा है:

'लेकिन अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत का इज़हार यूँ किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी ख़ातिर अपनी जान दी जब हम गुनाहगार ही थे। '

तीसरी बात: इस वाक़िये का सब से बड़ा मोजिज़ा यह है कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने इस आदमी के गुनाह माफ़ कर दिए। ठीक करने से पहले उन्होंने फ़रमाया: "बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह माफ़ कर दिए गए हैं।" अगर सिर्फ़ यही कहते तो लोग सोचते कि क्या वाक़ई गुनाह माफ़ हुए भी या नहीं। लेकिन जब उन्होंने इस आदमी को ठीक किया, तो सब ने देखा कि उनके पास वाक़ई इख़्तियार है गुनाह माफ़ करने का। यह इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह के पास होता है।

आज भी हज़रत ईसा अल-मसीह आप के गुनाह माफ़ कर सकते हैं, जैसे उन्होंने इस लक़वे के मरीज़ के किए।

चौथी बात: हज़रत ईसा अल-मसीह दूसरों के दिल के ख़यालात जानते थे। जब शरीअत के उलमा उनकी बात सुन कर अपने दिल में बुरा सोच रहे थे, तो हज़रत ईसा अल-मसीह उनका ख़यालात जान गए। वह सिर्फ़ बातें ही नहीं सुनते, बल्कि वह दिलो के हाल भी जानते हैं। अगर वह दूसरों के दिलो के हाल जान सकते हैं, तो वह आप के दिल के हाल भी जानते हैं।

हज़रत ईसा अल-मसीह ने उन लोगों को अपने पास बुलाया जो अल्लाह के क़रीब आना चाहते थे। लेकिन उन्होंने उन लोगों को रोका जो अपने दिल में दिखावा करते थे।

आज आप खुद सोचे कि आप किस तरह के इंसान हैं?

हज़रत ईसा अल-मसीह की ज़िंदगी बहुत ताक़तवर थी। उनकी पैदाइश सब से अलग थी। उनके मोजिज़े सबसे बढ़ कर थे। आज वह आप को बुला रहे हैं कि आप अपने गुनाहों से तौबा करें और उन पर ईमान लाएँ। वह चाहते हैं कि आप उनके शागिर्द बन जाएँ। क्या आप तैयार हैं?

उम्मीद है कि आप तैयार होगें।

सबक़ – 4

हज़रत ईसा अल-मसीह की ख़ास तालीमात

पिछले सबक में, मैंने हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश और उन के मौजिज़ात के बारे में बताया था। बहुत से नबियों ने हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश की पेशनगौई की थी। फ़रिश्ते भी आए और हज़रत मरियम अलैहस्सलाम और दूसरे लोगों को बताया कि हज़रत ईसा अल-मसीह पैदा होने वाले हैं। वो बग़ैर बाप के पैदा हुए। अल्लाह ने उन्हें भेजा ताकि वो हमारे गुनाहों की माफ़ी के लिए क़ुर्बानी दें। क्या किसी और नबी की पैदाइश इतनी ख़ास थी?

हज़रत ईसा अल-मसीह ने बीमारो को ठीक किया, मुर्दों को ज़िंदा किया। ये सब मोजिज़े उन्होंने इस लिए किए ताकि गुनाहगारों पर अपनी मौहब्बत ज़ाहिर करें। उन्हें अल्लाह ने इतना इख़्तियार दिया था कि वो गुनाह माफ़ कर सकते थे और हमारे दिलों के छुपे हुए ख़याल भी जानते थे। क्या किसी और नबी ने इतने मोजिज़े किए?

आज हम हज़रत ईसा अल-मसीह की ख़ास तालीमात पर ग़ौर करेंगे। उन्होंने फ़रमाया:
"राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर ख़ुदा बाप के पास नहीं आ सकता।"

तो गौर करें, हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी, उन्होंने बड़े-बड़े मौजिज़े किए, और उनकी तालीमात भी बहुत ज़बरदस्त थीं। मगर सब से ख़ास बात ये है कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों की माफ़ी के लिए अपनी जान क़ुर्बान की। उन्हें दफ़्न किया गया, और तीसरे दिन वो दोबारा ज़िंदा हो गए। फिर वो आसमान पर उठा लिए गए। अब वो जन्नत में हैं और क़यामत के दिन का इंतिज़ार कर रहे हैं।

अब मैं हज़रत ईसा अल-मसीह की तालीमात में से एक और पैग़ाम सुनाना चाहता हूँ, जो "इंजील शरीफ़" में है। ये पैग़ाम "पहाड़ी वाइज़" के नाम से मशहूर है, जो मत्ती बाब पाँच, छे और सात में है।

आइए, अब हम इंजील-ए-मत्ती (7:24-27) से सत्ताईस पढ़ते हैं:

लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की मानिंद है जिसने अपने मकान की बुनियाद चटान पर रखी।

बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी। लेकिन वह न गिरा, क्योंकि उस की बुनियाद चटान पर रखी गई थी।

लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिंद है जिसने अपना मकान सहीह बुनियाद डाले बग़ैर रेत पर तामीर किया।

जब बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी तो यह मकान धड़ाम से गिर गया।"

ये तालीम हमें बताती है कि दो तरह के लोग होते हैं।

एक वो जो हज़रत ईसा अल-मसीह की बात भी सुनते हैं और उस पर अमल भी करते हैं। दूसरे वो लोग है जो सिर्फ बात सुनते हैं, मगर उस पर अमल नहीं करते। दोनों ने बात सुनी, लेकिन फ़र्क़ ये था कि एक ने बात पर अमल किया जबकि दूसरे ने

अमल नहीं किया। अच्छे इंसान की मिसाल उस शख़्स की है जिसने अपना घर मज़बूत ज़मीन पर, यानी चट्टान पर बनाया। और बेवक़ूफ़ इंसान की मिसाल उस शख़्स की है जिसने अपना घर कच्ची ज़मीन यानी रेत पर बनाया। जब ज़िंदगी में मुश्किल वक़्त आता है — चाहे वो बीमारी हो, पैसों की तंगी हो, या घर का कोई मसला हो — तो जो हज़रत ईसा अल-मसीह की बातों पर अमल करता है, वो साबित क़दम रहता है। मगर जो अमल नहीं करता, वो मुश्किल वक़्त में टूट जाता है, जैसे कमज़ोर घर तूफ़ान में गिर जाता है।

ये तालीम हमें हज़रत ईसा अल-मसीह की अज़मत बताती है।

खैर, मैं एक और आयत पढ़ूँगा, जो "इंजील शरीफ़" में, यूहन्ना बाब चौदा — उसकी आयत छे में है। हज़रत ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया:

राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।

अगर आप अल्लाह तक पहुँचने का रास्ता तलाश कर रहे हैं, तो हज़रत ईसा अल-मसीह ही वो रास्ता हैं। अगर हम उनकी बातो पर अमल करेगें, तो वो हमें अल्लाह तक ले जाएँगे। लेकिन शर्त ये है कि हम उनकी बातो को सुनें और उस पर अमल भी करें। हज़रत ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया कि मैं **"हक़"** हूँ। अगर आप हक को जानना चाहते हैं, तो हज़रत ईसा अल-मसीह के पास आएँ। उनकी बातें सुनें। जैसे-जैसे आप उनके साथ चलेंगे, वो आप को हक़ दिखाएँगे। उन्होंने फ़रमाया कि मैं **"ज़िंदगी"** हूँ। यहाँ वो "हमेशा की ज़िंदगी" यानी जन्नत की ज़िन्दगी की बात कर रहे हैं।

आज हज़रत ईसा अल-मसीह की क़ब्र ख़ाली है, क्यूँकि वो दोबारा ज़िंदा हो कर जन्नत चले गए। अगर आप भी हमेशा की ज़िंदगी चाहते हैं, तो उनकी बातें मानें और उन पर अमल भी करें। उम्मीद है कि आपने हज़रत ईसा अल-मसीह की अज़मत को पहचाना होगा। उनकी पैदाइश सब से ख़ास थी। उनके मौजिज़े सब से बड़े थे। उनकी तालीमात सब से सच्ची थीं। और सब से बढ़ कर, वो हमारे गुनाहों की माफ़ी के लिए क़ुर्बानी देने आए थे।

आज आप के पास मौक़ा है कि हज़रत ईसा अल-मसीह की बात सुनें, अपने गुनाहों से तौबा करें, और उनके शागिर्द बन जाएँ।

सबक़ – 5

हज़रत ईसा अल-मसीह की ख़ास क़ुर्बानी

आज का सबक हज़रत ईसा अल-मसीह की वफात यानी मौत के बारे में है, जो इंजील शरीफ़ में लिखा गया है, ख़ास तौर पर मत्ती सत्ताइस में।

इस वाक़िये में, हम पढ़ेंगे और जानेगें कि किस तरह हज़रत ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों की माफ़ी के लिए सलीब पर अपनी जान दी। ये क़िस्सा थोड़ा लंबा है, इसलिए हम थोड़ा थोड़ा करके पढ़ेंगे, और बीच बीच में बात भी करेंगे, और इसी तरह आगे बढ़ते जाएँगे।

चलिए, हम इंजील-ए-मत्ती (27:21-24) पढ़ते है।

फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से थक्कर उन्होंने अरग़वानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए और उसे मसलूब करने के लिए ले गए।

शहर से निकलते वक़्त उन्होंने एक आदमी को देखा जो लीबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमौन था। उसे उन्होंने सलीब उठाकर ले जाने पर मजबूर किया।

यूँ चलते चलते वह एक मक़ाम तक पहुँच गए जिसका नाम गुलगुत्ता था। गुलगुत्ता यानी खोपड़ी का मक़ाम।

वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें कोई कड़वी चीज़ मिलाई गई थी। लेकिन चखकर ईसा ने उसे पीने से इनकार कर दिया।

जबकि हज़रत ईसा अल-मसीह ने कभी भी कोई भी गुनाह ना किया था, लेकिन फिर भी मज़हबी रहनुमाओं को उनसे नफ़रत थी। वो रात के वक़्त उन्हें गिरफ़्तार कर के अदालत ले गए और झूठ बोल कर उन पर इल्ज़ाम लगाया, ताकि उन्हें मरवा सकें। उन्हें डर था कि लोग हज़रत ईसा अल-मसीह को मानने लगेंगे और फिर लोग हमारी बात नहीं सुनेंगे। लेकिन असल बात ये है कि ये सब हज़रत ईसा अल-मसीह की अपनी ख़ुद की मर्ज़ी से हुआ। वो तो हमारे गुनाहों की क़ुर्बानी बनने के लिए ही आए थे। जब उन्हें गिरफ्तार किया गया, तो उन्होंने अपने साथियों से कहा: फ़िक्र न करो, अगर मैं चाहूँ तो अल्लाह ताला से कहूँ, और वो फ़रिश्तों की पूरी फ़ौज भेज देगा, मगर मेरी क़ुर्बानी का यही वक़्त है।

अब हम इंजील-ए-मत्ती (27:35-37) पढ़ेगें।

फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि किस किस को क्या क्या मिले उन्होंने क़ुरा डाला।

यूँ वह वहाँ बैठकर उस की पहरादारी करते रहे।

सलीब पर ईसा के सर के ऊपर एक तख़्ती लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह ईसा है।"

सलीब पर मारना बहुत दर्दनाक और ज़ालिमाना तरीक़ा था, लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह ने ये सब कुछ हमारी ख़ातिर बर्दाश्त किया। इंजील शरीफ़, रोमियों की किताब बाब तीन की आयत तैईस हमें बताती है कि

"सब ने गुनाह किया है और अल्लाह के जलाल से महरूम हैं"

गुनाह की वजह से अल्लाह से हमारा रिश्ता टूट गया है। अल्लाह पाक है, हम गुनाहगार हैं। लेकिन इंजील शरीफ़, रोमियों की किताब बाब पाँच की आयत आठ में ये भी लिखा है कि
"अल्लाह ने अपनी मोहब्बत यूँ ज़ाहिर की कि जब हम गुनाह में थे, मसीह ने हमारे लिए जान दी"
यानी हज़रत ईसा अल-मसीह की मौत एक क़ुर्बानी थी, जो हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए दी गई।

आइयें, अब हम इंजील-ए-मत्ती (27:45-54) पढ़ेगें।

दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही।

फिर तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “एली, एली, लमा शबक़्तनी” जिसका मतलब है, “ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?”

यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, “वह इलियास नबी को बुला रहा है।”

उनमें से एक ने फ़ौरन दौड़कर एक इस्फ़ंज को मै के सिरके में डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की।

दूसरों ने कहा, “आओ, हम देखें, शायद इलियास आकर उसे बचाए।”

लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े ज़ोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

बहुत सारे लोग खड़े होकर ये मंज़र देख रहे थे। कुछ ने उन्हें पानी या मशरूब देना चाहा, मगर हज़रत ईसा अल-मसीह ने कुछ न पिया। आसमान पर भी अजीब मंज़र था, सूरज छुप गया, तीन घंटे अंधेरा रहा। फिर हज़रत ईसा अल-मसीह ने जान दे दी। वो आप के लिए और मेरे लिए क़ुरबान हुए। उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। ज़लज़ला आया, चटानें फट गईं और क़ब्रें खुल गईं। कई मरहूम मुक़द्दसीन के जिस्मों को ज़िंदा कर दिया गया। वह ईसा के जी उठने के बाद क़ब्रों में से निकलकर मुक़द्दस शहर में दाख़िल हुए और बहुतों को नज़र आए। जब पास खड़े रोमी अफ़सर और ईसा की पहरादारी करनेवाले फ़ौजियों ने ज़लज़ला और यह तमाम वाक़ियात देखे तो वह निहायत दहशतज़दा हो गए। उन्होंने कहा, “यह वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद था।

इसका मतलब ये नहीं कि वो जिस्मानी तौर पर अल्लाह के फ़रज़न्द यानी बेटे थे, बल्कि वह रूहानी तौर पर अल्लाह की एक ख़ास, पाक और बरगुज़ीदा शख्सियत थी, जो हमारे गुनाहों के लिए क़ुर्बानी बने।

अब हम हज़रत ईसा अल-मसीह की मौत के उन चार बड़े असरात के बारे में बात करेंगे।

पहला असर; बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा यानी अल्लाह के घर का पर्दा फट गया, मतलब ये कि अब हज़रत ईसा अल-मसीह के ज़रिए अल्लाह से सीधा ताल्लुक़ मुमकिन है, जैसा कि खुद उन्होंने फ़रमाया: “राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर ख़ुदा बाप के पास नहीं आ सकता।”

दूसरा असर; उनकी मौत के वक़्त ज़मीन पर ज़लज़ला आया, यानी क़ुदरत ने भी पहचान लिया कि कुछ बड़ा हो रहा है।

तीसरा असर; कुछ नबी और नेक लोग, जिनकी क़ब्रें यरूशलेम में थीं, जैसे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, हज़रत ज़करिय्या अलैहिस्सलाम —वो ज़िंदा हो कर आए, और हज़रत ईसा अल-मसीह के हक़ में गवाही दी।

चौथा असर; वो रूमी सिपाही, जिस ने हज़रत ईसा अल-मसीह को सूली पर चढ़ाया था, उस ने भी मान लिया कि हज़रत ईसा अल-मसीह अल्लाह की तरफ़ से भेजे गए एक ख़ास इंसान थे यानी वो खुदा के बैटे थे।

आज, जब आप ये वाक़िआ सुन रहे हैं, तो आप के पास भी एक मौक़ा है।

क्या आप अपने गुनाहों से तौबा कर के हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाएँगे? वही एक ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने कभी भी गुनाह ना किया। उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के हुई, ताकि वो रूहानी तौर पर पाक हों। इसीलिए हज़रत याहया अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था, इंजील-ए-यूहन्ना (1:29)

"देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। '

हज़रत ईसा अल-मसीह आज भी आप के गुनाह धोना चाहते हैं, ताकि आप अल्लाह के क़रीब हो जाएँ। लेकिन ये तभी मुमकिन है, जब आप दिल से तौबा करें, और हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाएँ।

क्या आप आज से उन के सच्चे शागिर्द बनने के लिए तैयार हैं?

उम्मीद करता हूँ कि आप उनके सच्चे शागिर्द बनेगें।

सबक - 6

हज़रत ईसा अल-मसीह का दोबारा ज़िन्दा होना

हज़रत ईसा अल-मसीह हमारे गुनाहों के लिए मसलूब हुए। लेकिन वो मुर्दा नहीं रहें। असल में, हज़रत ईसा अल-मसीह आज भी ज़िन्दा हैं। वो आसमान में, अल्लाह तआला के पास बैठे हैं और उस दिन का इंतज़ार कर रहे हैं जब वो वापिस आएँगे और तमाम दुनिया का हिसाबो किताब लेंगे।

सोचो, अगर हम अल्लाह की हुज़ूरी में जाना चाहते हैं, तो वही हमें ले जा सकता है जो पहले से वहाँ बैठा हो।

आज मैं आपको एक वाक़िया सुनाने वाला हूँ — ये हज़रत ईसा अल-मसीह के दोबारा ज़िन्दा होने का वाक़िया है। ये इंजील शरीफ़ में मत्ती 28 में लिखा है।

हज़रत ईसा अल-मसीह इतने ताक़तवर हैं कि मरने के बाद भी फिर से ज़िन्दा हो गये, और अपनी कब्र से बाहर निकले।

देखें, दुनिया में ना जाने कितनी कब्रें हैं, और उनमें औलिया भी दफ़न हैं। लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह की कब्र खाली है।

आएें, हम मत्ती 28 को पढ़ते हैं:

इतवार को सुबह-सवेरे ही मरियम मग्दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र को देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो रहा था।

अचानक एक शदीद ज़लज़ला आया, क्योंकि रब का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर आया और क़ब्र के पास जाकर उस पर पड़े पत्थर को एक तरफ़ लुढ़का दिया। फिर वह उस पर बैठ गया।

उस की शक्लो-सूरत बिजली की तरह चमक रही थी और उसका लिबास बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद था।

पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते लरज़ते मुरदा से हो गए।

फ़रिश्ते ने ख़वातीन से कहा, "मत डरो। मुझे मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था।

वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को ख़ुद देख लो जहाँ वह पड़ा था।

और अब जल्दी से जाकर उसके शागिर्दों को बता दो कि वह जी उठा है और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे। अब मैंने तुमको इससे आगाह किया है।"

ख़वातीन जल्दी से क़ब्र से चली गईं। वह सहमी हुई लेकिन बड़ी ख़ुश थीं और दौड़ी दौड़ी उसके शागिर्दों को यह ख़बर सुनाने गईं।

अचानक ईसा उनसे मिला। उसने कहा, "सलाम।" वह उसके पास आईं, उसके पाँव पकड़े और उसे सिजदा किया।

ईसा ने उनसे कहा, "मत डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता दो कि वह गलील को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे देखेंगे।"

इस वाक़िये से हमें चार बड़ी सच्चाइयाँ मिलती हैं:

पहली सच्चाई: हज़रत ईसा अल-मसीह मौत को हराकर मुर्दों में से जी उठे! तीन दिन बाद, उन पर ईमान रखने वाली औरतें उनकी कब्र पर गईं। वो रोने गई थीं। लेकिन वहाँ उन्हें हज़रत ईसा अल-मसीह ज़िन्दा मिले! लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह मौत से भी ज़्यादा ताकतवर हैं। इसलिए वो हमें हमेशा की ज़िन्दगी यानी जन्नत में हमैशा की ज़िन्दगी दे सकते हैं।

दूसरी सच्चाई: फ़रिश्ता उनकी ज़िन्दगी की ख़बर देने आया। जैसे जब वो पैदा हुए थे तो फ़रिश्तों ने लोगों को खुशख़बरी दी थी, वैसे ही अब उनकी क़ब्र पर भी फ़रिश्ता उतरा। अल्लाह ताला चाहता था कि सबको मालूम हो जाए कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने मौत पर फ़तह यानी जीत हासिल करली है। आज भी अगर कोई हमेशा की ज़िन्दगी चाहता है, तो उसको चाहिए कि अपने गुनाहों से तौबा करे और हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाए।

तीसरी सच्चाई: हज़रत ईसा अल-मसीह ने वादा किया था कि उनके शागिर्द उन्हें देखेंगे। और सचमुच उन्होंने देखा! गलील में पहाड़ पर, ग्यारह शागिर्द उनके सामने आए और उन्होंने उन्हें सिज्दा किया। सिर्फ शागिर्द ही नहीं, बल्कि 500 से ज़्यादा लोगों ने उन्हें अपनी आँखों से ज़िन्दा देखा। इतने लोगों ने गवाही दी है कि आज हमें पूरा यक़ीन है — उनका दोबारा ज़िन्दा होना सच और हक़ीकत है।

चौथी सच्चाई: लोगों ने हज़रत ईसा अल-मसीह की इबादत की। औरतों ने भी सज्दा किया। शागिर्दों ने भी सज्दा किया। उनकी पैदाइश पर पूरब से नजूमी लोग आए और उन्होंने सज्दा किया। तूफ़ान थमा तो शागिर्द बोले: "यक़ीनन, आप अल्लाह के बेटे हैं।" इसका मतलब यह नहीं कि वो अल्लाह के जिस्मानी बेटे थे — बल्कि रूहानी बेटे थे, यानी अल्लाह से खास रिश्ते वाले।

मेरे अज़ीज़ो,

हज़रत ईसा अल-मसीह का मक़ाम एक नबी से बढ़कर है। वो कुंवारी औरत से पैदा हुए। उन्होंने लँगड़े को ठीक किया। अंधे को रोशनी दी। मुर्दे को ज़िन्दा किया। और सबसे अहम, उन्होंने अपनी जान हमारे गुनाहों की क़ुर्बानी के लिए दी। वो दफ़्न हुए। लेकिन फिर से ज़िन्दा हो गये। हज़रत ईसा अल-मसीह वाक़ई इबादत के लायक़ हैं।

मेरी उम्मीद है कि आपने इन बातों से उनकी अज़मत को पहचाना होगा। अगर हाँ, तो वो आज आपको बुला रहे हैं — तौबा करें, ईमान लाऐं, और उनके शागिर्द बन जाऐं।

अगली तालीमात होंगी — हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम के मौज़ू पर होगी।

आगे ज़रूर पढ़ते रहिए।

सबक - 7

हज़रत ईसा अल-मसीह की आठ हिदायतों का खुलासा

पिछली तालीमात में हमने जाना कि हज़रत ईसा अल-मसीह कौन हैं। अब हम सीखेंगे कि हज़रत ईसा अल-मसीह की पैरवी यानी उनका रास्ता कैसे अपनाना है। आज से हम आठ ख़ास हिदायतों की तालीम शुरू कर रहे हैं। इन्हें हम कहते हैं — हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम कहते हैं।

पिछली बार हमने सुना कि कैसे हज़रत ईसा अल-मसीह का पैदा होना बहुत खास था। बहुत से नबियों ने उनके आने की पेशनगौई की थी। फ़रिश्तों ने भी हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम और दूसरो को उनकी पैदाइश की खुशख़बरी दी थी।

हज़रत ईसा अल-मसीह कुंवारी से पैदा हुए। वो दुनिया में आए ताकि हमारी गुनाहों से निजात दें। उन्होंने बीमारों को अच्छा किया, मुर्दों को ज़िन्दा किया। वो इतने ताक़तवर हैं कि गुनाह भी माफ़ कर सकते हैं और इंसान के दिल के राज़ भी जानते हैं।

उन्होंने साफ़ कहा: **राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।**

अज़ीजो, अगर हम अल्लाह से रिश्ता बनाना चाहते हैं, तो हमें हज़रत ईसा अल-मसीह की बातों को सुनना और मानना होगा। लेकिन उनकी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी बात ये है कि उन्होंने सूली पर अपनी जान कुरबान की — ताकि हमारे गुनाह माफ़ हों। वो दफ़्न हुए, और तीसरे दिन दोबारा ज़िन्दा हुए। अपनी कब्र से बाहर निकले और फिर आसमान पर चले गए। अब वो अल्लाह के पास बैठे हैं और क़यामत के दिन वापिस आएँगे। इसीलिए, हमें उनकी हिदायतों को ग़ौर से सुनना और उस पर अमल करना चाहिए। उन्होंने कहा: **"अगर तुम मुझसे मोहब्बत करते हो तो मेरे अहकाम पर अमल करो।"**

हज़रत ईसा अल-मसीह ने बहुत सी हिदायतें दीं, मगर उनकी ये आठ अहकाम सबसे अहम हैं।

1. तौबा करना और ईमान लाना।
2. पाक ग़ुस्ल यानी बपतिस्मा लेना।
3. दुआ करना।
4. इंजील शरीफ़ सीखना।
5. लोगों को शागिर्द बनाना।
6. मोहब्बत करना।
7. जमाअत में शामिल होना और इशा-ए- रब्बानी यानी खुदावंद के नाम का खाना लेना।
8. सद्क़ा खैरात देना।

अब हम थोड़ा-थोड़ा इन अहकाम को समझें:

पहली हुक्म: तौबा और ईमान। तौबा मतलब — ग़लत रास्ता छोड़ कर नया रास्ता अपनाना। ईमान मतलब — हज़रत ईसा अल-मसीह पर भरोसा करना। सोचिए, अगर कोई आदमी गाड़ी चला रहा हो और उसे पता चले कि वो उल्टी सिम्त में जा रहा है, तो उसे मोड़ना पड़ेगा। यही तौबा है — गलत रास्ता छोड़ कर सही तरफ़ जाना।

दूसरा हुक्म: पाक गुस्ल। जब कोई शख़्स हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाता है, तो दूसरे ईमानवाले उसे पानी में पूरा डुबोता है। ये निशानी है कि उसने तौबा की है और अब वो मसीह का पैरोकार यानी मसीह का मानने वाला है।

तीसरा हुक्म: दुआ। दुआ मतलब — अल्लाह से बात करना। हज़रत ईसा अल-मसीह ने सिखाया कि हम किसी भी ज़ुबान में दुआ कर सकते हैं। अल्लाह अपने बच्चों की आवाज़ सुनना पसंद करता है।

चौथा हुक्म: इंजील शरीफ़ सीखना। इंजील शरीफ़ में हज़रत ईसा अल-मसीह की ज़िन्दगी और उनकी तालीम लिखी है। इस किताब में हिकमत और सचाई है। अगर हम मसीह के शागिर्द बनना चाहते हैं तो इस किताब को पढ़ना और समझना ज़रूरी है।

पाँचवां हुक्म: शागिर्द बनाना। जैसे अल्लाह हमें सिखाता है, वैसे ही हमें भी अपने दोस्तों, घरवालों और पड़ोसियों तक ये बातें पहुँचानी चाहिए।

छठां हुक्म: मोहब्बत। हज़रत ईसा अल-मसीह ने सिखाया कि सबसे बड़ी हिदायतें हैं — अल्लाह से मोहब्बत करना और अपने पड़ोसी से मोहब्बत करना।

सातवां हुक्म: जमाअत और इशा-ए-रब्बानी लेना। जमाअत यानी ईमान वालो की जमाअत। वो हफ़्ते में कम से कम एक बार मिलते हैं — दुआ करते हैं, इंजील शरीफ़ पढ़ते हैं, इबादत करते हैं और खुदावंद के नाम का खाना खाते हैं। ये खाना हमें याद दिलाता है कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों के लिए सूली पर जान दी।

आठवां हुक्म: खैरात। अगर हम मसीह के पैरवीकार हैं, तो हमें अपने माल में से दूसरों को देना चाहिए। अल्लाह ने जो हमें दिया है, उससे दूसरों की मदद करना चाहिए।

मेरे अज़ीज़ो,

मुझे मालूम है कि ये आठ अहकाम पहली बार सुनने में ज़्यादा लग सकते हैं। मगर अगले सबक़ों में हम हर अहकाम को धीरे-धीरे समझेंगे और इंजील शरीफ़ से मिसालें लेंगे।

बस यह बात याद रखो — सिर्फ़ जानना काफ़ी नहीं, बल्कि इन हिदायतों पर अमल करना ज़िन्दगी बदल देता है।

सबक - 8

हज़रत ईसा अल-मसीह का पहला हुक्म यानी तौबा करना और ईमान लाना

हज़रत ईसा अल-मसीह की राह पर चलने का पहला क़दम है तौबा करना और ईमान लाना।

जब हज़रत याहया (अलैहिस्सलाम) ने अपनी ख़िदमत शुरू की, तो उन्होंने फरमाया:
"तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही क़रीब आ गई है।"

इस पैग़ाम में उन्होंने ऐलान किया कि हज़रत ईसा अल-मसीह ही आसमान के बादशाह हैं, जो दुनिया में आए। इसलिए हर शख़्स को चाहिए कि अपनी ज़िन्दगी उन्हीं को सौंप दे।

जब हज़रत ईसा अल-मसीह ने अपनी ख़िदमत शुरू की, तो उन्होंने भी यही पैग़ाम सुनाया:
"तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही क़रीब आ गई है।"

आज भी जब हम हज़रत ईसा अल-मसीह का पैग़ाम सुनते हैं, तो हमें तौबा करनी चाहिए और अपनी ज़िन्दगी अल्लाह को सौंपनी चाहिए।

याद रखें, तौबा करना और ईमान लाना अलग नहीं हो सकते। तौबा करना का मतलब है पुरानी ग़लत राह छोड़ देना। ईमान लाने का मतलब है हज़रत ईसा अल-मसीह की तरफ़ मुड़ना और उन पर मुकम्मल भरोसा करना। वही इबादत के लायक़ हैं। वही हैं जिन्होंने हमारे गुनाहों के लिए सूली पर अपनी जान दी। वही हैं जो क़ब्र से ज़िन्दा हुए। वही हैं जो क़यामत के दिन पूरी दुनिया का हिसाब लेंगे।

आइये अब हम इन वाकिये को इंजील शरीफ़ में (लूका 19) को पढेंगे।

फिर ईसा यरीहू में दाख़िल हुआ और उसमें से गुज़रने लगा।

उस शहर में एक अमीर आदमी बनाम ज़क्काई रहता था जो टैक्स लेनेवालों का अफ़सर था।

वह जानना चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावुजूद उसे देख न सका, क्योंकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हुजूम था और ज़क्काई का क़द छोटा था।

इसलिए वह दौड़कर आगे निकला और उसे देखने के लिए अंजीर-तूत के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था।

जब ईसा वहाँ पहुँचा तो उसने नज़र उठाकर कहा, “ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में ठहरना है।”

ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और ख़ुशी से उस की मेहमान-नवाज़ी की।

यह देखकर बाक़ी तमाम लोग बुड़बुड़ाने लगे, “इसके घर में जाकर वह एक गुनाहगार के मेहमान बन गए हैं।”

लेकिन ज़क्काई ने ख़ुदावंद के सामने खड़े होकर कहा, "ख़ुदावंद, मैं अपने माल का आधा हिस्सा ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैंने नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।"

ईसा ने उससे कहा, "आज इस घराने को नजात मिल गई है, इसलिए कि यह भी इब्राहीम का बेटा है।

क्योंकि इब्ने-आदम गुमशुदा को ढूँडने और नजात देने के लिए आया है।"

मेरे अज़ीज़ो, इस वाक़िये के तीन हिस्से हैं:

ज़कई गुनाहगार था – वह लालची था और लोगों से ज़्यादा पैसा लेता था। हज़रत ईसा ने उससे मोहब्बत की – उन्होंने उसका नाम लेकर बुलाया और उसके घर गए। ज़कई ने तौबा की और ईमान लाया – उसने अपनी दौलत का बड़ा हिस्सा ग़रीबों को देने और नाइंसाफी से लिया हुआ चार गुना लौटाने का वादा किया।

सोचिए, एक लालची आदमी कैसे इतना दरियादिल हो गया? यह हज़रत ईसा अल-मसीह की ताक़त है। इसी तरह हमें भी करना है। जब हम हज़रत ईसा की राह पर चलना चाहते हैं, तो हमें अपने पुराने गुनाह छोड़कर उनकी तरफ़ मुड़ना होगा।

गुनाह कई तरह के होते हैं – लालच, झूठ, चोरी, शराब, ज़िना यानी बदकारी, ग़ुस्सा, ज़ुल्म। ज़कई लालच का शिकार था।

आप किस गुनाह में फँसे हैं?

जैसे ज़कई ने अपनी ग़लत राह छोड़कर हज़रत ईसा अल-मसीह की राह पकड़ी, वैसे ही आज आपको भी तौबा करनी चाहिए और ईमान लाना चाहिए।

उम्मीद है कि आप तौबा करके ईमान ले आयें होंगें।

सबक - 9

खुदावंद ईसा अल-मसीह का दूसरा हुक्म यानी पाक गुस्ल लेना जिसे बपतिस्मा लेना भी कहा जाता है।

आज हम दूसरा हुक्म सीखेंगे, जो हमारे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने दिया। ये हुक्म है *पाक ग़ुस्ल लेना* यानी बपतिस्मा लेना।

जब हम तौबा करके और अपने गुनाहों को छोड़कर ईमान लाते हैं, तब हम बपतिस्मा लेते हैं। ये इस बात की निशानी है कि हमने दिल से तौबा की और ईमान लायें। ये क़दम खुदावंद ईसा अल-मसीह के पीछे चलने के लिए बहुत अहम है।

आज हम *इंजील शरीफ़* से एक क़स्सा देखेंगे – *आमाल 8:26-38*। इसमें अल्लाह ने अपने एक बंदे, हज़रत फ़िलिप्पुस को भेजा, ताकि वो, एक दूसरे शख़्स को ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का शागिर्द बनाए।

26एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उठकर जुनूब की तरफ़ उस राह पर जा जो रेगिस्तान में से गुज़रकर यरूशलम से ग़ज़्ज़ा को जाती है।"

27फ़िलिप्पुस उठकर रवाना हुआ। चलते चलते उस की मुलाक़ात इथोपिया यानी मुल्के हब्शा की मलिका कंदाके के एक ख़्वाजासरा से हुई। मलिका के पूरे ख़ज़ाने पर मुक़र्रर यह दरबारी इबादत करने के लिए यरूशलम गया था

28और अब अपने मुल्क में वापस जा रहा था। उस वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा था।

29रूहुल-क़ुद्स ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उसके पास जाकर रथ के साथ हो ले।"

30फ़िलिप्पुस दौड़कर रथ के पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा है। उसने पूछा, "क्या आपको उस सबकी समझ आती है जो आप पढ़ रहे हैं?"

31दरबारी ने जवाब दिया, "मैं क्योंकर समझूँ जब तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?" और उसने फ़िलिप्पुस को रथ में सवार होने की दावत दी।

32कलामे-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा था, यह था,

'उसे भेड़ की तरह ज़बह करने के लिए ले गए।

जिस तरह लेला बाल कतरनेवाले के सामने ख़ामोश रहता है,

उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।

33उस की तज़लील की गई और उसे इनसाफ़ न मिला।

कौन उस की नसल बयान कर सकता है?

क्योंकि उस की जान दुनिया से छीन ली गई।'

34दरबारी ने फ़िलिप्पुस से पूछा, “मेहरबानी करके मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ किसका ज़िक्र कर रहा है, अपना या किसी और का?”

35जवाब में फ़िलिप्पुस ने कलामे-मुक़द्दस के इसी हवाले से शुरू करके उसे ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाई।

36सड़क पर सफ़र करते करते वह एक जगह से गुज़रे जहाँ पानी था। ख़्वाजासरा ने कहा, “देखें, यहाँ पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?”

37[फ़िलिप्पुस ने कहा, “अगर आप पूरे दिल से ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।” उसने जवाब दिया, “मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का फ़रज़ंद है।”]

38उसने रथ को रोकने का हुक्म दिया। दोनों पानी में उतर गए और फ़िलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया।

इस वाकिए से, खुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में हम क्या सीखते हैं?

सब से पहले, हम यह देखते हैं के दूसरे पैग़म्बरो ने भी खुदावंद ईसा अल-मसीह के आने की पैशनगोई की थी। इस वाकिए में, ख़्वाजा-सरा हज़रत यसायाह अलैहिस्सलाम के तैरप्पनवें बाब से पढ़ रहा था, जिसने हमारे गुनाहों के लिए खुदावंद ईसा अल-मसीह की क़ुरबानी वाली मौत के बारे में बताया। यह खुदावंद ईसा अल-मसीह की अहमियत को ज़ाहिर करता है। बहुत से पैग़म्बरों ने खुदावंद ईसा अल-मसीह के आने के बारे में बात की। दरअसल, खुदावंद ईसा अल-मसीह के आने के बारे में, किताब-ए-मुक़द्दस में 300 से ज़्यादा पेशनगौइयां हैं, जो खुदावंद ईसा अल-मसीह से पहले आए हुए पैग़म्बरों ने की थी। हम यह भी देखते हैं के खुदावंद ईसा अल-मसीह तलाश करने वालों को अपने पास ला सकते हैं। इस ख़्वाजा-सरा के पास कोई सिखाने वाला नहीं था और वो रेगिस्तान में अकेला था। मगर खुदा ने उसे देखा। इस लिए, खुदा ने अपने रसूल को इस ख़्वाजा-सरा के पास भेजा। यहाँ हम खुदा की अज़मत देखते हैं। वो सब कुछ जानता है और सच्चे मन से तलाश करने वालों को अपने पास ला सकता है।

इस वाक़िए से लोगों के बारे में हम क्या सीखते हैं?

ख़्वाजा-सरा का यह वाक़िया हमारे लिए हौसला अफ़ज़ाई का नमूना होना चाहिए। यह एक ऐसा शख्स था, जो एक ऐसे मुल्क में रहता था, और जो सच्चे खुदा की इबादत नहीं करता था। लेकिन, यह आदमी सच की तलाश कर रहा था। वो इतना मुतजस्सुस यानी जोश में था कि वो सच की तलाश में हब्शा से येरुशलम तक हज़ारों मील का सफर करके आया। येरुशलम में, उसे खुदा का कलाम मिला और वो उसे पढ़ रहा था, लेकिन उसे समझने में मुश्किल हो रही थी। आज, बहुत से लोग इस हब्शी ख़्वाजा-सरा की तरह खुदा की तलाश कर रहे हैं।

मुझे उम्मीद है कि आप भी उन में से होगें। अगर आप तलाश कर रहे हैं, तो मुझे उम्मीद है कि आप खुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी करने के लिए तैयार होंगे, जिस तरह इस शख्स ने किया, और जैसे जैसे आप उनके बारे में और सीखेंगे।

फिलिप्पुस और हब्शी ख़्वाजा-सरा से हम क्या सीखते हैं?

इस वाकिये में, फिलिप्पुस और हब्शी खौजा-सरा दोनों आला नमूने पेश करते हैं। फिलिप्पुस हर हाल में खुदा की फरमाबरदारी करने के लिए तैयार था। जब एक फरिश्ता फिलिप्पुस के पास ज़ाहिर हुआ, तो उसे एक शहर से रेगिस्तान में जाने के लिए कहा गया। उसने खुदा के हुक्म पर सवाल नहीं उठाया। इसके बजाय, उसने फरमाबरदारी की। फिर, जब उसने खौजा-सरा के रथ को देखा, तो

रूह ने उसे बताया, “उसके पास जाकर रथ के साथ हो ले।” दरअसल, यह एक ख़तरनाक क़दम था क्यूँके खौजा-सरा एक दौलतमंद शख्स था और उसके पास मुहाफ़िज़ भी थे। लेकिन फिलिप्पुस ने फ़ौरन फरमाबरदारी की।

फिलिप्पुस की तरह, हमें भी फ़ौरन खुदा की फरमाबरदारी करने के लिए तैयार रहना चाहिए, फिर चाहे कुछ भी हो। फिलिप्पुस को जब मौका मिला, तो वो खुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में बताने के लिए भी तैयार था। उसने एक ऐसे आदमी को देखा जो सुनने के लिए तैयार था और फ़ौरन उनके बारे में बताया। इसी तरह, हमें भी दूसरों की खुदा की पैरवी करने में मदद करना सीखना चाहिए।

हब्शा खौजा-सरा सच की तलाश और फरमाबरदारी की एक खूबसूरत तस्वीर है। सच की उसकी ख्वाहिश इतनी ज़्यादा थी कि उसने खुदा की तलाश में हज़ारों मील का सफर बहुत सा खर्च उठाकर किया। उसने बहुत मेहनत से पढ़ा, जैसा कि हम देखते हैं जब वो हज़रत यसायाह अलैहिस्सलाम का सहीफा पढ़ रहा था। वो सच सीखने के लिए फिलिप्पुस की बात सुनने के लिए तैयार था। जब उसे सच मिला, तो उसने फ़ौरन तौबा की और उस पर ईमान लाया। उसने कहा, “देखें, यहाँ पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?”

पाक गुस्ल यानी बपतिस्मा के बारे में हम क्या सीखते हैं।

क्या आपने तौबा की है और हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाये हैं? अगर आप ईमान लाये है, तो आपको भी पाक गुस्ल में, जिसे बपतिस्मा कहते हैं, उनकी पैरवी करनी चाहिए। जैसा कि हब्शा खौजा-सरा के साथ हुआ, बपतिस्मा एक खास तरह का गुस्ल है जब हज़रत ईसा अल-मसीह पर दूसरा कोई ईमान रखने वाला हमें पानी में पूरी तरह डुबो देता है। क्यूँके खुदावंद ईसा अल-मसीह इतने ताक़तवार हैं, हमें अपनी ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक बार बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है। बपतिस्मा से, हम उनकी ताक़त और फ़ज़्ल से पाक हो जाते हैं। अपने बपतिस्मा में, हम खुदा के लोगों का हिस्सा बन जाते हैं।

इंजील शरीफ़ में रोमियों की किताब के बाब - 6 बपतिस्मा के मानी के बारे में और सिखाता है:

3या क्या आपको मालूम नहीं कि हम सब जिन्हें बपतिस्मा दिया गया है इससे मसीह ईसा की मौत में शामिल हो गए हैं?

4क्योंकि बपतिस्मे से हमें दफ़नाया गया और उस की मौत में शामिल किया गया ताकि हम मसीह की तरह नई ज़िंदगी गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली क़ुदरत ने मुरदों में से ज़िंदा किया।

5चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उसके साथ पैवस्त हो गए हैं इसलिए हम उसके जी उठने में भी उसके साथ पैवस्त होंगे।

यह इंजील शरीफ़ का हिस्सा बपतिस्मा के रूहानी मानी सिखाता है। जब हम बपतिस्मा में पानी के नीचे जाते हैं, तो हम अपनी पुरानी ज़िन्दगियों से खुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ मर जाते हैं। बिल्कुल जैसे वो मारे गए और क़ब्र में दफ़न किए गए, हम भी अपने आप को अपनी पुरानी ज़िन्दगियों से मरा हुआ समझते हैं।

फिर, जब हम पानी से बाहर आते हैं, तो हमें खुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ एक नई ज़िन्दगी दी जाती है। बिल्कुल जैसे वो मुरदों में से जी उठे, हम बपतिस्मा के पानी से एक नई ज़िन्दगी में बाहर आते हैं। अगर आप खुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ एक नई ज़िन्दगी चाहते हैं, तो आपको बपतिस्मा में उनकी फरमाबरदारी करनी चाहिए।

सबक -10

खुदावंद ईसा अल-मसीह का तीसरा हुक्म यानी दुआ करना।

खुदावंद ईसा अल-मसीह का तीसरा हुक्म है कि हम दुआ करें। पहले दो हुक्म थे – तौबा करना, ईमान लाना, और पाक गुस्ल यानी बपतिस्मा लेना। अब इस सबक़ में, हम सीखेगें कि किस तरह खुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ चलते हुए हमें आगे बढ़ना है। आगे बढ़ने के लिए हमें दुआ करनी होगी और इंजील शरीफ़ पढ़नी होगी। अगला हुक्म इंजील शरीफ़ सीखने के बारे में होगा।

खुदावंद ईसा अल-मसीह बहुत अज़ीम हैं, इसलिए हमें ध्यान से उनके हुक्मों पर अमल करना चाहिए। उन्होंने अपने शागिर्दों से फरमाया:

"अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे।" (यूहन्ना 14:15)।

याद कीजिए, वही खुदावंद ईसा अल मसीह जिन्होंने बीमारों को ठीक किया, मुर्दों को जिंदा किया। उन्होंने हमारे गुनाहों के लिए सूली पर अपनी जान दी, वो दफनाये गए, और वो तीसरे दिन ज़िंदा हुए। वाकई, उनके अहकाम अमल करने लायक हैं।

आज का सबक़ दुआ के बारे में है, जो कि मत्ती उसका बाब 6 आयत 5 से 15 में दर्ज है, जहाँ खुदावंद ईसा अल-मसीह ने अपने शागिर्दों को दुआ करनी सिखाई। उन्होंने फरमाया:

दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना जो इबादतख़ानों और चौकों में जाकर दुआ करना पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है।

इसके बजाए जब तू दुआ करता है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा। दुआ करते वक़्त ग़ैरयहूदियों की तरह तवील और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी बहुत-सी बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। उनकी मानिंद न बनो, क्योंकि तुम्हारा बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियात से वाक़िफ़ है,

बल्कि यों दुआ किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,

तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।

तेरी बादशाही आए।

तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो।

हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।

हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर

जिस तरह हमने उन्हें मुआफ़ किया

जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।

और हमें आज़माइश में न पड़ने दे

बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख। [क्योंकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल अबद तक तेरे ही हैं।]

क्योंकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको मुआफ़ करेगा।

लेकिन अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़ नहीं करेगा। आमीन!

हम यहाँ से खुदा के बारे में क्या सीखते हैं?

सबसे पहले, खुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें सिखाया कि खुदा से इस तरह दुआ करें जैसे आप अपने बाप से। ये बहुत बड़ी बात है कि हम खुदा को अपना बाप कह सकते हैं! वो सबसे अच्छा बाप है, क्योंकि वो रहमत वाला और ताक़तवर है। वो हमारा आसमानी बाप है जो हमें हमारे दुनियावी बाप से भी ज्यादा मोहब्बत करता है।

कभी-कभी "बाप" का मतलब ग़लत समझा जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि मसीही मानते हैं खुदा ने बीवी ली और बच्चे पैदा किए। अस्तग़फ़िरुल्लाह! ये कुफ्र है! कोई भी खुदावंद ईसा अल-मसीह का मानने वाला ये बात नहीं मानता। और न ही हम ये मानते हैं कि खुदा ने कभी जिस्मानी बेटे पैदा किए। खुदावंद ईसा अल-मसीह की पैदाइश अलग और मौजिज़ाती थी। वो खुदा के रूहानी बेटे थे, जिस्मानी नहीं। जब हम खुदा को बाप कहते हैं तो इसका मतलब है कि वो अपने बंदों से बाप जैसी मोहब्बत करता है। लेकिन वो मोहब्बत दुनियावी बाप से भी ज़्यादा अच्छी है, क्योंकि दुनियावी बाप गुनाहगार होते हैं। हमारा आसमानी बाप हमारे गुनाह माफ़ करता है और हमारी ज़रूरतें पूरी करता है।

इस तालीम से हम खुदा के बारे में और क्या सीखते हैं?

खुदा रियाकारी यानी दिखावा यानी ढोंग से नफ़रत करता है। रियाकार लोगों को दिखाते हैं कि वो अच्छे हैं, लेकिन उनके दिल खुदा से दूर होते हैं। खुदा को ऐसा मज़हब पसंद नहीं है। वो चाहता है कि लोग दिल से उससे मोहब्बत करें। इसलिए हमें अंदर से बदलना है ताकि खुदा के करीब हो सकें।

अब हम दो लोगों की गलत तरीके से की गई दुआ को देखते है।

पहला दुआ का तरीका जो गलत है वो है, कि ऐसे रियाकार लोग जो खुदा के बजाय लोगो को दिखाने के लिए दुआ करते हैं। जैसे खुदावंद ईसा अल मसीह ने फरमाया: "रियाकार लोग ईबादतखानो और चोको में खड़े होकर दुआ करना पसंद करते हैं ताकि लोग उन्हें देखें।" अगर कोई आदमी सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिए दुआ करता है, तो उसकी दुआ खुदा को पसंद नहीं। सही तरीका ये है कि अकेले में दुआ करें। तब हमें दुआ का असली इनाम मिलेगा – जो कि है खुदा के साथ मज़बूत रिश्ता है।

दूसरा दुआ का तरीका जो गलत है वो है, कि लोग तवील और बेमानी बातें दोहराते हैं और सोचते हैं कि बस ज़्यादा बोलने से उनकी दुआ सुनी जाएगी। खुदावंद ईसा अल-मसीह उन लोगों की बात कर रहे थे जो खास तरह की दुआएँ पढ़ते थे, और उन्हें लगता था कि इन अल्फ़ाज़ में कोई ताक़त है। बहुत से लोग ऐसी दुआएँ याद करते हैं जो किसी और ज़ुबान में होती हैं, और उन्हें समझ भी नहीं आतीं। वो सोचते हैं कि यही खुदा चाहता है।

लेकिन अगर हमारा खुदा हमारा आसमानी बाप है, तो क्यों चाहेगा कि उसके बच्चे उससे अजनबी ज़ुबान में तवील और बेमानी बातें दोहराते रहें, जिसे वो खुद नहीं समझते? ये सही तरीका नहीं है। सही दुआ ये है कि हम अपना दिल खुदा के सामने खोल दें और उससे ऐसे बात करें जैसे अपने बाप से करते हैं। वो अपने बच्चों की असली आवाज़ सुनना चाहता है!

तो खुदा क्या चाहता है कि हम किस तरह से दुआ करें?

बहुत आसान है। हमें ऐसे दुआ करनी चाहिए जैसे बच्चे अपने बाप से बात करते हैं। अपनी ज़रूरतें खुदा को बताऐं, अपने दिल की बातें करें। वो सुनता है, वो आपकी परवाह करता है।

कुछ लोग पूछते हैं: "कितनी बार दुआ करनी चाहिए?"

खुदावंद ईसा अल-मसीह ने कोई खास गिनती के बारे में कोई हुक्म नहीं दिया। बल्कि उन्होंने खुदा के साथ रिश्तों पर ज़ौर दिया। उन्होंने फरमाया, दुआ का मक़सद खुदा के करीब होना है। बच्चा अपने प्यारे बाप से कितनी बार बात करना चाहता है? जितनी बार भी हम बात करना चाहें! तो ऐसे ही हमें दुआ करनी चाहिए। शुरुआत सुबह उठकर करें, और रात को सोने से पहले दुआ करें। फिर धीरे-धीरे दिन में भी और दुआ करते रहें। खुदावंद ईसा अल-मसीह ने ये भी सिखाया कि दुआ के लिए कोई खास जगह नहीं, कोई खास वक्त नहीं। उन्होंने कोई रस्में नहीं दीं। लेकिन ये नमूना-दुआ हमारे लिए मददगार है। अगर आपको दुआ करनी नहीं आती तो इस दुआ से शुरू करें, फिर अपने अल्फ़ाज़ में, अपनी ज़ुबान में खुदा से बात करे।

चलिए, अब ये दुआ फिर से करे, और इसके बाद, अपने अपने अल्फाज़ में अपने आसमानी बाप से और दुआ करे।

हे हमारे बाप, जो आसमान पर है,
तेरा नाम पाक समझा जाए।
तेरी बादशाही आए।
तेरी मरज़ी ज़मीन पर वैसे ही पूरी हो जैसे आसमान पर होती है।
आज हमें हमारी रोज़ की रोटी दे।
और हमारे गुनाह माफ़ कर, जैसे हमने भी अपने गुनहगारों को माफ़ किया।
और हमें आज़माइश में न डाल, बल्कि हमें बुराई से बचा।

हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर, जिस तरह हमने अपने गुनहगारों को मुआफ़ किया।

और हमें आज़माइश में न पड़ने दे, बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।
आमीन।

उम्मीद है कि आज आपने दुआ का तरीका सीखा होगा। खुदा से एक मज़बूत रिश्ता बनाने के लिए हमें खुदावंद ईसा अल-मसीह के हुक्म पर अमल करते हुऐ खुदा से दुआ करनी चाहिए.

सबक - 11

खुदावंद ईसा अल-मसीह का चौथा हुक्म, इंजील शरीफ सीखना यानी किताब-ए-मुकद्दस सीखना।

पिछले सबक़ में, हमने खुदावंद ईसा अल-मसीह से दुआ और तरीक़े के बारे में सीखा। इस सबक़ में हम और सीखेंगे कि हमारी रूहानी ज़िन्दगी कैसे मज़बूत होगी — और सबक होगा इंजील शरीफ़ से सीखना। दुआ करना और खुदा के कलाम को पढ़ना— ये दोनों हमारी रूहानी ज़िन्दगी की मज़बूती के लिए बहुत ज़रूरी हैं।

इस सबक में, खुदावंद ईसा अल-मसीह फरमाते हैं कि खुदा का कलाम इंसान के लिए खाने से भी ज़्यादा ज़रूरी है।

सोचें, अगर कोई शख्स एक दिन खाना न खाए तो उसे भूख लगेगी। अगर कई दिन न खाए तो कमज़ोर हो जाएगा। और अगर ऐसे ही चलता रहे तो आख़िरकार मर जाएगा। इसी तरह, अगर हम खुदा का कलाम नहीं सीखते हैं तो हमारी रूहानी ज़िन्दगी भी मर जाएगी।

आज हम मत्ती 4:1-11 से वो वाकिआ पढ़ेंगे जब शैतान ने खुदावंद ईसा अल-मसीह को आज़माया। यहाँ हम देखेंगे कि खुदावंद ईसा अल-मसीह खुदा के कलाम से शैतान पर जीत कैसे हासिल कर पाए —अगर ईसा अल-मसीह के लिए खुदा के कलाम को जानना ज़रूरी था, तो हमारे लिए भी और भी ज़रूरी है।

1फिर रूहुल-क़ुद्स ईसा को रेगिस्तान में ले गया ताकि उसे इबलीस से आज़माया जाए।

2चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा रखने के बाद उसे आख़िरकार भूक लगी।

3फिर आज़मानेवाला उसके पास आकर कहने लगा, "अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इन पत्थरों को हुक्म दे कि रोटी बन जाएँ।"

4लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, "हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।"

5इस पर इबलीस ने उसे मुक़द्दस शहर यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुक़द्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा,

6"अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'वह तेरी ख़ातिर अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे'।"

7लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "कलामे-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, 'रब अपने ख़ुदा को न आज़माना'।"

8फिर इबलीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़ पर ले जाकर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और उनकी शानो-शौकत दिखाई।

9वह बोला, "यह सब कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिरकर मुझे सिजदा करे।"

10लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया और कहा, "इबलीस, दफ़ा हो जा! क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, 'रब अपने ख़ुदा को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर'।"

11इस पर इबलीस उसे छोड़कर चला गया और फ़रिश्ते आकर उस की ख़िदमत करने लगे।

इस वाकिये से, हम खुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में क्या सीखते हैं?

सब से पहले, हम देखते हैं कि उनका रोज़ा बहुत ताक़तवर था। उन्होंने चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा रखा। उन्होंने सिर्फ़ दिन में ही नहीं बल्कि रात में भी रोज़ा रखा।

हम यह भी देखते हैं कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को ख़ुदा के कलाम का इल्म था। तीन बार उन्होंने तौरात शरीफ़ से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की किताब से हवाला दिया। जब शैतान ने उनसे कहा कि पत्थरों से रोटी बना लो, मसीह ने फ़रमाया, "लिखा है कि इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।" जब शैतान ने उनसे कहा कि अपने आप को येरूशलेम की बैतुल मुकद्दस की चोटी से गिरा दो, मसीह ने फ़रमाया, " कलामे-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, 'रब अपने ख़ुदा को न आज़माना'। " आख़िर में जब शैतान ने ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह से कहा कि मुझे सजदा करो, तो मसीह ने फ़रमाया, "इबलीस, दफ़ा हो जा! क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, 'रब अपने ख़ुदा को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर''। ये तीनों हवाले तौरात शरीफ़ से हैं, यानी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उस किताब को गहराई से पढ़ा था और जब ज़रूरत हुई तो उसकी तालीमात को बयान किया।

इस कहानी में हम यह भी देखते हैं कि हालाँकि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को आज़माया गया, मगर उन्होंने गुनाह नहीं किया। हालाँकि ख़ुदा का कलाम कहता है, "सब ने गुनाह किया और ख़ुदा के जलाल से महरूम हो गए" (रोमियों 3:23), लेकिन यह बात ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर सच्ची नहीं होती। वजह यह है कि उनकी ख़ास और रूहानी पैदाइश उन्हें पूरी तरह पाक-साफ़ दुनिया में लाई। ख़ुद शैतान भी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को गुनाह करने पर मजबूर न कर सका!

आख़िर में हम देखते हैं कि शैतान ने दो बार ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को " अल्लाह का फ़रज़ंद" कहा। उसने कहा, " अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इन पत्थरों को हुक्म दे कि रोटी बन जाएँ " फिर कहा, " अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलाँग लगा दे " यह एक ख़ास ल़क़ब है ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का कि वो ख़ुदा का बेटा हैं। हम सब ख़ुदा की औलाद हैं, मगर ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह उस तरह से ख़ुदा का बेटा हैं जो और किसी पर सच्ची नहीं होती। जब हम कहते हैं कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ख़ुदा का बेटा हैं तो हमें यह ग़लतफ़हमी नहीं करनी चाहिए कि वो जिस्मानी बेटे हैं। ख़ुदा ने कभी बीवी नहीं ली और न औलाद पैदा की जैसे इंसान करते हैं! बल्कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह रूहानी बेटे हैं ख़ुदा के।

हम शैतान के बारे में इस कहानी से क्या सीखते हैं?

सब से पहले हम देखते हैं कि शैतान आज़माने वाला है। उसने तीन बार कोशिश की कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को गुनाह पर ले आए, मगर नाकाम हुआ। हम जानते हैं कि शैतान ताक़तवर और बहुत अक़लमन्द है। उसने खुदावंद ईसा अल-मसीह को बैतुल मुकद्दस की चोटी पर और एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर ले जाकर खड़ा कर दिया। लेकिन अपनी ताक़त के बावजूद शैतान को खुदावंद ईसा अल-मसीह के सामने भागना पड़ा। जान लो कि अगर तुम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के क़रीब रहोगे तो शैतान और उसके बुरी रूहे तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकते।

जान लिजिए, कि इस दुनिया में, हर इंसान पर आज़माइश आती है। कुछ लोग आज़माए जाते हैं तब, और कुछ लोग ख़ुदा के रास्ते पर क़ायम रहते हैं। अगर हम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरोकार बनना चाहते हैं तो हमें गुनाह को ठुकराना होगा जब आज़माइश आए। मगर यह भी जान लो कि जब हम नाकाम हों, तब भी खुदावंद ईसा अल-मसीह हमसे मोहब्बत करते हैं।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी करने के लिए आपको उनकी तालीमात पढ़नी होंगी, ताकि आप आज़माइश और शैतान के मुक़ाबले में खड़े रह सको। हज़रत ईसा अल-मसीह की तालीमात इंजील शरीफ़ में मौजूद हैं। इंजील शरीफ़ 27 किताबों पर मुश्तमिल है और कुल 260 बाब हैं। अगर आप रोज़ तीन बाब पढ़ें, तो सिर्फ़ तीन महीनों में पूरी इंजील शरीफ़ ख़त्म कर सकते हो। तीन बाब पढ़ने में सिर्फ़ पंद्रह मिनट लगते हैं। यह अमल आपकी रूहानी ज़िंदगी को बहुत मज़बूत कर देगा। सबसे अच्छा आग़ाज़ इंजील शरीफ़ की पहली किताब से करना है, जिसे "इंजील मत्ती" कहते हैं।

अगर आप पढ़ नहीं सकते तो ख़ुदा का कलाम सुनें। अपने मोबाइल में इंजील शरीफ़ की ऑडियो रिकॉर्डिंग डालें और रोज़ सुनें। बार-बार सुने और आपकी रूहानी ज़िंदगी बहुत तरक़्क़ी करेगी। जैसे-जैसे आप इंजील शरीफ़ की तालीमात और दुआ में बढ़ते जाएंगे, वैसे-वैसे आप ख़ुदा के और क़रीब होते जाएंगे।

सबक - 12

खुदावंद ईसा अल-मसीह का पाँचवा हुक्म, जाओ और तमाम कौमों को शागिर्द बनाओ।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान रखने वाले हर एक शख्स की ज़िम्मेदारी है कि वह दूसरों को खुशखबरी सुनायें ताकि वे भी शागिर्द बन सकें। जब खुदावन्द ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों के लिए सलीब पर अपनी जान कुरबान की, और फिर उन्हें दफ़्न किया गया और तीसरे दिन वो ज़िन्दा हुए—तो उन्होंने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया:

“'इसलिए जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो।” (मत्ती 28:19)

इस हुक्म का मतलब है कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह दुनियाँ के हर मुल्क, हर बिरादरी और हर क़ौम के लोगों से मुहब्बत करते हैं, और चाहते हैं कि हर इंसान उनका शागिर्द बनें। अब जब आप ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान ला चुके हैं, तो वह आपको भी इस्तेमाल करना चाहते हैं, ताकि आप भी दूसरों को उनका शागिर्द बना सकें।

सबक शुरू करने से पहले मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ। आपको क्या लगता है कि ख़ुदा किन लोगों को इस्तेमाल करना चाहता है, ताकि वे दूसरों की मदद करें कि कैसे वे हज़रत ईसा अल-मसीह का रास्ता अपनाएँ? अगर आप समझते हैं कि ख़ुदा सिर्फ़ बहुत पढ़े-लिखे, या बहुत नेक लोगों को ही इस्तेमाल करेगा, तो आज का सबक आपको हैरान कर देगा। क्योंकि ख़ुदा आम और सादे लोगों को भी बड़े कामों के लिए इस्तेमाल करता है।

आज का सबक लंबा है, इसलिए हम इसे हिस्सों में समझेंगे।

सबक शुरू करने से पहले, हमें बनी इस्राईल के बारे में जानना चाहिए। इस्राईल हज़रत याक़ूब अलैयहिस्सलाम का एक नाम था। इसलिए बनी इस्राईल वही क़ौम थी जो हज़रत याक़ूब अलैयहिस्सलाम की औलाद से आई। ये लोग हज़रत मूसा अलैयहिस्सलाम की तालीमात और तौरात शरीफ़ को मानते थे। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के ज़माने में बनी इस्राईल वालों को अक्सर “यहूदी” कहा जाता था। “यहूदी” नाम हज़रत याक़ूब अलैयहिस्सलाम के बेटे यहूदा से आया है।

आज का सबक हम युहन्ना की इंजील 4 बाब आयात 5-30 और फिर 39 - 42 तक से पढ़ेंगे। उस वक्त खुदावन्द ईसा अल-मसीह सामरिया के इलाके में थे।

ईसा सामरिया से गुज़र रहा था। चलते-चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिसका नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी।

6वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे।

एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।” 8(उसके शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

9सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इनकार करते हैं। उसने कहा, “आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरख़्वास्त कर सकते हैं?”

हमारे ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह अपनी खिदमत के दौर में हर वक़्त सफ़र करते रहते थे और ख़ुदा का कलाम लोगों तक पहुँचाते थे। उस ज़माने में दो क़ौमें आपस में नाराज़ और एक–दूसरे से अलग–थलग रहती थीं — **बनी इस्राईल** और **सामरियों** की क़ौम।

इन दोनों क़ौमों की **ज़बान, पहनावा, खाना पीना, और मज़हब** अलग–अलग थे। यही वजह थी कि ज़्यादातर यहूदी और सामरी लोग आपस में बात भी नहीं करते थे। लेकिन खुदावंद ईसा अल–मसीह सब इंसानों से मुहब्बत करते थे। इसी लिए, बनी इस्राईल से होने के बावजूद भी, वो सामरियों के पास भी खुशी–खुशी गए।

आपको ये बात अच्छी तरह मालूम होनी चाहिए कि ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह की खिदमत सिर्फ़ एक क़ौम या एक मुल्क के लिए नहीं थी। उनकी खिदमत **पूरी दुनियाँ** के लोगों के लिए थी — हर ज़बान, हर क़ौम और हर इलाक़े के लिए।

10ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।”

11ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला?

12क्या आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत उसके पानी से लुत्फ़अंदोज़ हुआ?”

13ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने बातचीत को फौरन रूहानी बातों की तरफ मोड़ दिया। उन्होंने उस औरत से कहा कि **वो उसे “ज़िन्दगी का पानी” दे सकते हैं।** उन्होंने फरमाया कि **जो भी इस ज़िन्दगी के पानी को पिएगा, उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी**, बल्कि उसके अंदर एक ऐसा सोता यानी चश्मा फूट पड़ेगा *जो उसे हमेशा की ज़िन्दगी यानी अबदी ज़िन्दगी देता रहेगा।*

बेशक, ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने यहाँ एक **मिसाल** का इस्तेमाल किया था ताकि नजात की हकीकत को समझाया जाए। उनका मतलब ये था कि **जो भी उनके पास आएगा, वो उसे रूहुल क़ुद्स और अबदी ज़िन्दगी अता करेंगे।**

लेकिन वो औरत ईसा अल–मसीह की इन रूहानी बातों को नहीं समझ सकी। उसे ये बातें सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर पानी की बातें लगीं — जबकि असल में ईसा अल–मसीह उसके दिल की प्यास और रूह की ज़रूरत की बात कर रहे थे।

15औरत ने उससे कहा, “ख़ुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

16ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ाविंद को बुला ला।”

17औरत ने जवाब दिया, "मेरा कोई ख़ाविंद नहीं है।" ईसा ने कहा, "तूने सहीह कहा कि मेरा ख़ाविंद नहीं है,

18क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।"

19औरत ने कहा, "ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। 20हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।"

उस औरत ने ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह से कहा कि वो उसे ये "ज़िन्दगी का पानी" अता करदें। मगर वो अभी भी इन बातों का **रूहानी मतलब** नहीं समझ पा रही थी। ज़िन्दगी का पानी हासिल करने से पहले, उसके **गुनाह** को ज़ाहिर करना और उसका हल करना ज़रूरी था।

इसलिए, ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने उससे कहा कि **अपने शौहर को बुला लाओ।** इस तरह उन्होंने, उसके **ज़िना** के गुनाह को सामने ला दिया। फिर उन्होंने उसे बता दिया कि उन्हें पहले से पता था कि उसका माज़ी गुनाह से भरा है, और उसका कोई शौहर नहीं है। इस औरत के लिए ये बात बहुत हैरान कर देने वाली रही होगी, कि खुदावंद **ईसा अल–मसीह उसके गुनाह जानते हुए भी उससे बात कर रहे थे।** फिर भी उन्होंने उसकी तौहीन नहीं की, बल्कि प्यार और रहमत से उससे बात की। ये बातें सुनकर उस औरत को समझ आ गया कि खुदावंद **ईसा अल–मसीह एक नबी हैं।** फौरन उसने पूछा कि **इंसान ख़ुदा के क़रीब कैसे हो सकता है?** वो ये सोच रही थी कि क्या उसे सामरियों के तरीके से इबादत करनी चाहिए या बनी इस्राईल के तरीके से।

इसके जवाब में ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने उसे यह हकीकत बताई

21ईसा ने जवाब दिया, "ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में। 22तुम सामरी उस की परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इसके मुक़ाबले में हम उस की परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात यहूदियों में से है। 23लेकिन वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उस की परस्तिश करें।"

25औरत ने उससे कहा, "मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।"

26इस पर ईसा ने उसे बताया, "मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।"

यह गुनहगार औरत ख़ुदा की इबादत के तरीक़ों के बारे में बहुत से सवाल रखती थी। वो **मसीह** के आने का इंतज़ार कर रही थी ताकि वो आकर इन बातों को साफ़-साफ़ समझाए। इसीलिए, ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने उसे अपना राज़ बता दिया कि **वही मसीह हैं** — वही जिसका लोग सदियों से इंतज़ार कर रहे थे। ये बात कि खुदावंद ईसा अल–मसीह ने अपनी असली पहचान एक गुनहगार औरत पर ज़ाहिर की, इस बात का सबूत है कि **उन्हें मालूम था कि यह औरत उनके पीछे चलने के लिए तैयार है।** इस मुलाक़ात के बाद हम देखते हैं कि **ख़ुदा ने उसी औरत को इस्तेमाल किया** ताकि वो दूसरों तक खुदावंद ईसा अल–मसीह का पैग़ाम पहुँचाए। उसने पूरे शहर में जाकर बताया कि "मुझे एक ऐसा शख़्स मिला है जिसने मेरे दिल की सारी बातें बता दीं — क्या वो मसीह नहीं हो सकता?" ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह हमेशा उन लोगों पर **बहुत रहमत और मेहरबानी** करते थे जो गुनाह छोड़कर तौबा करने और उनके पीछे चलने के लिए तैयार होते थे।

27उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुर्रत न की कि "आप क्या चाहते हैं?" या "आप इस औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?"

28औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29"आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?" 30चुनाँचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास आए।

तो यह गुनहगार औरत, ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह से मिलकर, वहाँ से निकली और अपने पूरे गाँव के लोगों को जाकर बताने लगी। वो कहती थी, **"आओ, एक ऐसे शख़्स को देखो जिसने मेरी ज़िंदगी की हर बात मुझे बता दी। क्या यह मसीह हो सकता है?"** उसकी गवाही सुनकर और उसके जज़्बे को देखकर, गाँव के लोग खुदावंद ईसा अल–मसीह की तरफ़ आने लगे। वो खुद देखना और समझना चाहते थे कि **ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह असल में कौन हैं।** इसी तरह, **ख़ुदा हमसे भी यही चाहता है** कि हम अपनी ज़िंदगी की कहानी, और यह कि ख़ुदा ने हमें कैसे बदला, दूसरों को बताएँ — ताकि लोग भी दिलचस्पी लेकर खुदावंद ईसा अल–मसीह के बारे में ज़्यादा जानना चाहें।

39उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे में यह गवाही दी थी, "उसने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है।" 40जब वह उसके पास आए तो उन्होंने मिन्नत की, "हमारे पास ठहरें।" चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा। 41और उस की बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से लोग ईमान लाए। 42उन्होंने औरत से कहा, "अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।"

उस गुनहगार औरत की गवाही की वजह से बहुत से लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पास आए, उन्होंने उनकी बातें सुनीं और ईमान लाए। उन्होंने गवाही दी कि वह "वाक़ई दुनिया का नजात-दहिंदा है।" ख़ुदा ने इस औरत को इस्तेमाल किया ताकि बहुत से लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पास आएं। इसलिए, यह गुनहगार औरत एक बहुत अच्छी मिसाल है ऐसे शख़्स की जिसे ख़ुदा ने दूसरों को शागिर्द बनाने के लिए इस्तेमाल किया। अब उसकी ज़िन्दगी के बारे में सोचो। क्या वह पढ़ी-लिखी थी? शायद ही। क्या उसे ख़ुदा के कलाम का गहरा इल्म था? नहीं, उसने कभी ख़ुदा का कलाम नहीं पढ़ा था। क्या वह इज़्ज़तदार खातून थी? नहीं, वह गुनहगार थी और उसके गाँव का हर शख़्स जानता था कि वह गुनहगार है। क्या वह बहुत अरसे से ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरूकार थी? नहीं, वह तो नई ईमान वाली थी।

अगर ख़ुदा इस गुनहगार औरत को दूसरों को शागिर्द बनाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है, तो वह आपको भी इस्तेमाल कर सकता है। इस औरत ने बस इतना किया कि अपने दोस्तों और घरवालों के पास गई और उन्हें बताया कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के ज़रिये ख़ुदा ने उसकी ज़िन्दगी कैसे बदल दी। ख़ुदा ने उसकी कहानी को इस्तेमाल किया ताकि गाँव के दूसरे लोगों के दिल में ख़ुदा को तलाश करने की चाह पैदा हो। अक्सर हम इस बात की कहानी को कि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी कैसे बदली, आप अपनी "गवाही" में बतायें। अपनी गवाही में बतायें कि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी में क्या किया है।

आपकी **गवाही में** तीन हिस्से होने चाहिए:

1. ईसा अल-मसीह पर ईमान लाने से पहले आपकी ज़िन्दगी कैसी थी।
2. आप ने कैसे तौबा की, और खुदावंद ईसा अल-मसीह पर कैसे ईमान लाये।

3. ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने आपकी ज़िन्दगी कैसे बदली।

करीब तीन मिनट के इस वाकिये को सुनाने के लिए तैयार करें। एक मिनट में बतायें कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान रखने से पहले आपकी ज़िन्दगी कैसी थी। फिर एक मिनट में बतायें कि आपने कैसे तौबा की, और ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर कैसे ईमान लायें। आख़िर में, एक मिनट में बतायें कि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी कैसे बदल दी। यह वाकिया अपने आप तैयार हो जायेगा।

अपनी गवाही को तैयार करने के बाद, अपने दोस्तों और घरवालों के लिए दुआ करें। दुआ करें कि ख़ुदा आपको रास्ता दिखाए कि किसका दिल आपकी गवाही सुनने के लिए खुला है। उस शख़्स के लिए दुआ करने के बाद, अपना वक़्त निकाल कर उसके साथ बैठें, और उसे बतायें कि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी में क्या क्या किया? अगर वह और जानना चाहे, तो उसे ये रिकॉर्डिंग्स सुनायें। अगर वह और सीखना चाहे, तो उसे दूसरी तालीमात सुनायें, और उसकी मदद करते रहियें कि वह ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी कैसे करे। इसी तरह, ख़ुदा आपको भी दूसरों को शागिर्द बनाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

अब जबकि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी में काम किया है, तो सोचियें कि आप किसकी मदद करोगे कि वह ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी कर सके?

सबक - 13

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का छटाँ हुक्म, अपने पड़ोसी से वैसी ही मौहब्बत रखें जैसे अपने आपसे रखते हैं।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हर पैरोकार चाहिए कि दूसरों से उसी तरह मोहब्बत करे जैसे वह अपने आप से करता है। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के दो सबसे बड़े हुक्म ये हैं कि ख़ुदा से मोहब्बत करो और अपने पड़ोसी से मोहब्बत करो। आज की हमारी तालीम इंजील शरीफ़ से लूका 10:25–37 से है।

सबक को शुरू करने से पहले, हमारी पिछली तालीम को याद रखिए कि बनी-इसराईल और सामरी अलग-अलग तहज़ीबों से थे और अक्सर एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे। जो लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की बात सुन रहे थे, सब बनी-इसराईल से थे। इसलिए सुनने वालों के ख़याल में सामरी बुरे लोग समझे जाते थे।

आइये, अब हम सबक शुरू करते हैं

फिर एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को फँसाने की ख़ातिर खड़ा हुआ। उसने पूछा, "उस्ताद, मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी ज़िंदगी पा सकता हूँ?"

26ईसा ने उससे कहा, "शरीअत में क्या लिखा है? तू उसमें क्या पढ़ता है?"

27आदमी ने जवाब दिया, "'रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताक़त और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।' और 'अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है'।"

28ईसा ने कहा, "तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही कर तो ज़िंदा रहेगा।"

29लेकिन आलिम ने अपने आपको दुरुस्त साबित करने की ग़रज़ से पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है?"

30ईसा ने जवाब में कहा, "एक आदमी यरूशलम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह डाकुओं के हाथों में पड़ गया। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे ख़ूब मारा और अधमुआ छोड़कर चले गए।

31इत्तफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीहू की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ होकर आगे निकल गया।

32लावी क़बीले का एक ख़ादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे निकल गया।

33फिर सामरिया का एक मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो उसे उस पर तरस आया।

34वह उसके पास गया और उसके ज़ख़्मों पर तेल और मै लगाकर उन पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उस की मज़ीद देख-भाल की।

35अगले दिन उसने चाँदी के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, 'इसकी देख-भाल करना। अगर ख़र्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा'।"

36फिर ईसा ने पूछा, "अब तेरा क्या ख़याल है, डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी कौन था? इमाम, लावी या सामरी?"

37आलिम ने जवाब दिया, "वह जिसने उस पर रहम किया।"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने कहा, "बिलकुल ठीक। अब तू भी जाकर ऐसा ही कर।"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें दो सबसे बड़े हुक्म सिखाए। पहला यह है: "अपने रब ख़ुदा से अपने पूरे दिल से, अपनी पूरी जान से, अपनी पूरी ताक़त से और अपने पूरे दिमाग़ से मोहब्बत करो।" दूसरा हुक्म यह है कि "अपने पड़ोसी से उसी तरह मोहब्बत करो जैसे तुम अपने आप से करते हो।" ये हमारी ईमान की सबसे बड़ी तालीमात हैं।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें बताया कि हमारा पड़ोसी कौन है। उन्होंने एक वाक्या सुनाया एक बनी इसराईली आदमी के बारे में जिसे रास्ते में मार-पीट कर ज़ख़्मी कर दिया गया। उसकी सारी चीज़ें लूट ली गईं और उसे लहूलुहान हालत में सड़क पर छोड़ दिया गया। फिर एक काहिन उस रास्ते से गुज़रा और उसने उसे देखा।

यह काहिन हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से था और बनी इसराईल की इबादत की इमामत करता था। वह एक इज़्ज़तदार रूहानी रहनुमा था। मगर उसने उस आदमी की मदद नहीं की। फिर एक लावी आया और उसने भी उस आदमी को देखा। लावी, हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के बेटे लावी की औलाद में से होता था। लावी बैतुल मुक़द्दस में इबादतगाह की देखभाल करते थे। लेकिन इस लावी ने भी उस आदमी की मदद नहीं की। आख़िर में एक सामरी आदमी आया और उसने उसे देखा। सामरी बनी-इसराईल से अलग क़ौम का था। हक़ीक़त यह है कि बनी-इसराईल और सामरी एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे। फिर भी उस सामरी आदमी ने रास्ते में पड़े हुए आदमी की मदद की और उसके इलाज का ख़र्च भी उठाया।

इस क़िस्से को बयान करने के बाद, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने एक सवाल किया:
"इन तीनों में से, तुम्हारे ख़याल में उस आदमी का पड़ोसी कौन साबित हुआ जो डाकुओं के हाथों में पड़ गया था?"

शरीअत के आलिम ने जवाब दिया,
"वह जिसने उस पर रहम किया।"

तब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उससे कहा,
"जा और तू भी ऐसा ही कर।"

इस बात का बुनियादी नुक़्ता यह था कि जो लोग अलग-अलग क़ौमों से भी हों, वही हमारे पड़ोसी हैं; हमें उनसे भी उसी तरह मोहब्बत करनी चाहिए जैसे हम अपने आप से करते हैं। दूसरों से मोहब्बत करना, खुदावंद ईसा अल-मसीह के मानने वालों की सबसे अहम ज़िम्मेदारियों में से एक है।

यह बात बहुत ध्यान देने वाली है कि वह शरीअत का आलिम जो सबसे पहले ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पास आया, वह एक आलिम-ए-दीन था। वह तौरात शरीफ़ का बड़ा आलिम था, जो ख़ुदा ने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर नाज़िल की थी। वह ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह को आज़माने के इरादे से आया था। लिखा है कि "शरीअत का एक आलिम उठा ताकि उसे आज़माए।" बहुत से मज़हबी रहनुमा दूसरों को परखना यानी आज़माना चाहते हैं, मगर अपनी ज़िंदगी में तालीमात को लागू नहीं करते। यह भी लिखा है कि उस आलिम ने पूछा, "और मेरा पड़ोसी कौन है?" इसमें कोई शक नहीं कि वह चाहता था कि उसे सिर्फ़ बनी-इसराईल के लोगों से ही मोहब्बत करनी पड़े। हुक्म सुनने के बाद भी वह अपनी ज़िम्मेदारी को कम करना चाहता था। ज़रा

सोचिए, जब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने इस मिसाल के ज़रिये दिखाया कि सामरी भी उसका पड़ोसी है, तो उसे कितनी मायूसी हुई होगी!

बहुत से लोग, उस शरीअत के आलिम की तरह होते हैं। वे अपने पड़ोसियों से मोहब्बत करना नहीं चाहते। इस वाकिये में काहिन और लावी भी अपने पड़ोसी से मोहब्बत करने के लिए तैयार नहीं थे। बात यह है कि कुछ लोग बहुत ज़्यादा मज़हबी होते हैं, लेकिन उनमें मोहब्बत नहीं होती। ख़ुदा इस तरह के बर्ताव से ख़ुश नहीं होता। अगर हम वाक़ई ख़ुदा को मानते हैं, तो हम दूसरों से मोहब्बत करेंगे। इंजील शरीफ़ कहती है: "हम इसलिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने पहले हमसे मुहब्बत रखी।" (1 यूहन्ना 4:19)।

इसलिए अगर कोई शख़्स मोहब्बत नहीं करता, तो इसका मतलब यह हो सकता है कि वह हक़ीक़त में ख़ुदा को नहीं मानता। हमें ऐसा शख़्स बनने से डरना चाहिए जो मज़हबी तो हो, लेकिन उसका दिल मोहब्बत से ख़ाली हो। इसके बजाय, हमें सामरी शख्स की मिसाल पर चलना चाहिए। उसने बे ग़र्ज़ होकर सड़क पर पड़े हुए आदमी से मोहब्बत की और उसे अपना पड़ोसी समझा। उसने अपनी ज़िंदगी रोक दी यानी वह रास्ते में रूका और उस आदमी को ज़रूरी इलाज के लिए ले गया। बेशक वह मसरूफ था, लेकिन फिर भी उसने अपने काम से वक़्त निकाल कर उस आदमी की मदद की। उसने उसके साथ वैसा ही सुलूक किया जैसा वह चाहता था कि लोग उसके साथ करें। उसने अपनी जेब से पैसे निकाल कर उस आदमी के तमाम ख़र्च अदा किए, जिससे वह कभी पहले मिला भी नहीं था। मुख़्तसर यह कि उसने अपने पड़ोसी से अपनी खुद की तरह मोहब्बत की। हमें भी जाकर यही करना चाहिए।

ख़ुदा चाहता है कि हम तमाम लोगों से मोहब्बत करें। इसकी शुरुआत हमें अपने क़रीबी लोगों से करनी चाहिए। शौहर, अपनी बीवी से मोहब्बत करें। उन्हें अज़ीज़ रखें और उनकी तरक़्क़ी के लिए जो कुछ कर सकते हो, करें। बीवी, अपने शौहर से मोहब्बत करें और अपने हर अमल और बात में उनका एहतराम करें। अपने आस-पास के लोगों के बारे में सोचो, ख़ास तौर पर अपने ख़ानदान और क़रीबी पड़ोसियों के बारे में। कौन ज़रूरत में है? आप उन्हें ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की मोहब्बत कैसे दिखा सकते हो?

कभी-कभी पड़ोसी से मोहब्बत करने का मतलब उसे खाना, कपड़े या इमदाद देना होता है। लेकिन अक्सर इसका मतलब हौसला अफ़ज़ाई की बातें कहना या किसी मुश्किल काम में उसकी मदद करना भी होता है। अपने पड़ोसियों से मोहब्बत करने का सबसे बुनियादी तरीक़ा यह है कि हम उनके लिए दुआ करें और ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का पैग़ाम उनको सुनायें। जब यह तालीम ख़त्म हो जाए, तो रुक कर दुआ करें। दुआ करे कि ख़ुदा आपके ख़ानदान और आपके पड़ोसियों को बरकत दे। दुआ करे और ख़ुदा से पूछें कि वह कौन-सा एक ख़ास शख़्स है जिससे वह चाहता है कि आप मोहब्बत करो। ख़ुदा से दुआ करो कि वह आपको रास्ता दिखाए कि आप उस शख़्स को अपनी मोहब्बत कैसे दिखा सकते हो। फिर जाऐं और वही करें जिसकी रहनुमाई ख़ुदा ने आपको दी है।

अब इसे अपनी ज़िंदगी की आदत बना लिजिए। अपने ख़ानदान और पड़ोसियों के लिए दुआ करना अपनी आदत बनाऐं, और ऐसे रास्ते तलाश करें जिनसे आप लोगों से खुद की तरह मोहब्बत कर सको और जैसे ख़ुदा ने आप से मोहब्बत की है।

सबक - 14

खुदावंद ईसा अल-मसीह का सातवाँ हुक्म, इशा-ए-रब्बानी।

इशा-ए-रब्बानी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरोकारों के लिए एक बहुत अहम फर्ज़ है। पाक गुस्ल और इशा-ए-रब्बानी — ये दो फराइज़ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें दियें, ताकि हम खुशखबरी को अपनी ज़िंदगी में सही तरह लागू कर सकें। आज की तालीम *लूका 22:7–20* से है।

सबक शुरू करने से पहले, मैं *ईद-ए-फ़सह* नाम के एक त्योहार के बारे में समझाना चाहता हूँ। ये बनी-ए-इस्राईल का सालाना त्योहार था, जिसमें वो याद किया करते थे कि ख़ुदा ने हज़रत मूसा (अ.स.) के ज़रिये उन्हें मिस्र से किस तरह निकाला। उस वक़्त ख़ुदा ने एक फ़रिश्ता भेजा था जो हर घर के बड़े बेटे की जान ले लेता था। लेकिन ख़ुदा ने अपने लोगों को हुक्म दिया कि एक लैला यानी दुम्बा क़ुरबान करें और उसका ख़ून अपने दरवाज़े पर लगा दें। जिस घर पर ख़ून लगा होता, फ़रिश्ता उस घर को फ़सह करता, यानी उसे छोड़कर आगे बढ़ जाता।— इसीलिए इसे *ईद-ए-फ़सह* कहा जाता है। आज के वाकिये में भी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह और उनके शागिर्द ईद-ए-फ़सह मना रहे थे।

लूका 22:7–20 का बयान

7 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के लेले को क़ुरबान करना था।

8 ईसा ने पतरस और यूहन्ना को आगे भेजकर हिदायत की, "जाओ, हमारे लिए फ़सह का खाना तैयार करो ताकि हम जाकर उसे खा सकें।"

9 उन्होंने पूछा, "हम उसे कहाँ तैयार करें?"

10 उसने जवाब दिया, "जब तुम शहर में दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे चलकर उस घर में दाख़िल हो जाओ जिसमें वह जाएगा।

11वहाँ के मालिक से कहना, 'उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?'

12वह तुमको दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।"

13दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

14मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के साथ खाने के लिए बैठ गया।

15उसने उनसे कहा, "मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ।

16क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया हो।"

17फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और कहा, "इसको लेकर आपस में बाँट लो।

18मैं तुमको बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे अल्लाह की बादशाही के आने पर पियूँगा।”

19फिर उसने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उसने कहा, “यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।”

20इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, “मै का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है, वह ख़ून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।

इस ईद-ए-फ़सह के खाने में, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने रोटी ली और तोड़ कर कहा कि ये मेरा बदन है — जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है। मेरी याद में ऐसा ही किया करो। फिर प्याला लिया और कहा कि यह मेरे ख़ून में एक नया अहद है — जो तुम्हारे गुनाहों की माफी के लिए बहाया गया है। मेरी याद में ऐसा ही किया करो। इसलिए आज हम इस अमल को “इशा-ए-रब्बानी” कहते हैं,

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने सिखाया कि **रोटी** उनके **बदन** की नुमाइंदगी करती है, जो हमारे लिए तोड़ा गया। उन्होंने कहा कि **मै यानी शरबत का प्याला** उनके उस ख़ून की नुमाइंदगी करता है, जो हमारे लिए बहाया गया। इसलिए इशा-ए-**रब्बानी** एक ऐसा वक़्त है जब हम याद करते हैं कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों के लिए **सलीब** पर अपनी जान दे दी। सलीब पर उनका बदन तोड़ा गया। सलीब पर उनका ख़ून बहाया गया। इसी काम के ज़रिए ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों को माफ़ किया और हमें ख़ुदा के सामने रास्त और कबूल किया हुआ बना दिया।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उस वक़्त के बारे में बात की जब **ख़ुदा की बादशाहत** पूरी तरह ज़ाहिर होगी। उसने उनसे कहा, “मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया हो।” ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह जानते थे कि वह बहुत जल्द **सलीब** पर कुरबान किये जायेंगे और शागिर्दों से जुदा कर दिए जाएँगे। वह यह भी जानते थे कि एक दिन आने वाला है जब उनकी बादशाहत पूरी **क़ुदरत** के साथ क़ायम होगी। जिस दिन की वह बात कर रहे थे, वह **हिसाब का दिन यानी कयामत का दिन** है, जब ख़ुदा की बादशाहत पूरी तरह आ जाएगी। अगर हम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरोकार हैं, तो हिसाब के दिन की यह हक़ीक़त हमें बहुत बड़ा सुकून देती है। सलीब पर उनकी कुरबानी के ज़रिए हमारे गुनाह माफ़ हो चुके हैं। इसलिए हम हिसाब के दिन का इंतज़ार पूरे ईमान के साथ कर सकते हैं। हमारे लिए हिसाब का दिन डर का दिन नहीं, बल्कि **बड़ी खुशी और जश्न** का दिन होगा। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह इस दुनिया की सारी बुराइयों को मिटा देंगे, और हम हमेशा-हमेशा के लिए **ख़ुदा के साथ** होंगे।

इस हिस्से में ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने अपने ही **मौत** के बारे में भी नबूवत की, ताकि हमारे गुनाहों की माफ़ी हो सके। उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी अपनी जान दे दी, ताकि हम **ख़ुदा के सामने रास्त** ठहरें। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की **क़ुर्बानी की मौत** को याद करने के लिए, उनके पैरोकारों के इकट्ठा होने में **इशा-ए-रब्बानी** बाक़ायदा ली जाती है। हम इस इकट्ठा होने को **जमाअत** कहते हैं। हमारा फर्ज़ यह है कि ये जमाअतें कम-से-कम हफ़्ते में एक बार ज़रूर मिलें, आम तौर पर किसी घर में। मसलन, कोई जमाअत **जुमे की दोपहर** या **इतवार की सुबह** इकट्ठा हो सकती है। जब जमाअतें जमा होती हैं, तो वे **दुआ** करती हैं, **इबादती गीत** गाती हैं, **इंजील शरीफ़** पढ़ती हैं, और **इशा-ए-रब्बानी** में शरीक होती हैं। किसी जमाअत का रुक्न बनने के लिए ज़रूरी है कि आदमी पहले अपने **गुनाहों से तौबा** करे और फिर **पाक गुस्ल** ले।

इशा-ए-रब्बानी लेने से पहले, जमाअत **तौबा** और **दुआ** के लिए वक़्त लेती है। इशा-ए-रब्बानी लेना हमें यह मौक़ा देता है कि हम अपनी ज़िंदगी को फिर से **ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की सलीब** के पास ले आएँ, ताकि रहमत और फ़ज़्ल हासिल कर सकें।

तौबा के बाद, कोई शख़्स **रोटी** लेता है, उसे तोड़ता है, और हमें यह याद दिलाता है:

जिस रात ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया उसने रोटी लेकर 24शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, "यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो। (1 कुरिन्थियों 11:23–24) इसके बाद, हर वह शख़्स जिसने **बपतिस्मा** लिया होता है, रोटी का एक टुकड़ा लेता है, और जमाअत **दुआ** के साथ मिलकर उसे खाती है।

इसके बाद कोई शख़्स मै यानी **शर्बत का प्याला** लेता है और कहता है:

इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, "मै का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो मुझे याद करने के लिए पियो।" 26क्योंकि जब भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह वापस न आए। (1 कुरिन्थियों 11:25–26) फिर वह प्याला आगे बढ़ाया जाता है, और हर वह शख़्स जिसने **पाक गुस्ल** लिया होता है, उसमें से पीता है। आख़िर में सब मिलकर **दुआ** करते हैं और एक **इबादती गीत** गाते हैं।

इस अमल में शरीक होने के लिए ज़रूरी है कि आदमी पहले अपने **गुनाहों से तौबा** करे, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान लाये, और **पाक गुस्ल** ले। इसके बाद उसे चाहिए कि अपने क़रीब रहने वाले ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के दूसरे पैरोकारों के साथ, कम-से-कम हफ़्ते में एक बार, **जमाअत** में इकट्ठा होना शुरू करे। जमाअत के तौर पर हम बाक़ायदा मिलकर इशा-ए-**रब्बानी** लेते हैं। इशा-ए-रब्बानी लेने के बाद हर शख़्स अपने ईमान में **नया सुकून और ताज़गी** महसूस करता है।

इशा-ए-रब्बानी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की **मौत की याद** का एक निशान है। यह उन सब लोगों के लिए भी एक **तस्वीर और गवाही** है जो ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में सीखने के लिए आपकी **जमाअत** में आते हैं।

सबक - 15

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का आठवाँ हुक्म, दिल से देना यानी ज़कात देना।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हर पैरोकार की ज़िम्मेदारी है कि वह ख़ुदा के काम के लिए माली तौर पर इमदाद करे। जब ख़ुदा हमें फ़राख़दिली से देता है तो, इसलिए हमें भी उसके कामों के लिए खर्च करना चाहिए। आज हम आठ हुक्मों में से आख़िरी हुक्म सीखेंगे — दिल से **देना**। यह हुक्म इंजील शरीफ़ के मरक़ुस 12:41–44 से लिया गया है।

आज के सबक़ शुरू करने से पहले, मैं बनी-इसराईल की तहज़ीब के बारे में थोड़ी बात बताना चाहता हूँ। तौरात शरीफ़ में ख़ुदा ने अपने लोगों को यरूशलेम में बैतुल मुक़द्दस बनाने का हुक्म दिया, जहाँ वे इबादत के लिए आया करते थे। इबादत का एक हिस्सा यह भी था कि बैतुल मुक़द्दस के काम के लिए माली इमदाद दी जाए। इस सबक में, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह बैतुल मुक़द्दस के उस हिस्से में बैठे हुए थे जहाँ ये इमदाद व ज़कात दिए जाते थे।

41ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिये डालते हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रक़में डाल रहे थे।

42फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए।

43ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है।

44क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

चूँकि यह वाक़िया बहुत मुख़्तसर है, इसलिए मैं इसे एक बार फिर से पढ़ लेता हूँ, ताकि हम इसे अच्छी तरह समझ सकें और याद रख सकें।

41ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिये डालते हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रक़में डाल रहे थे।

42फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए।

43ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है।

44क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

आज के सबक़ में हम एक ग़रीब औरत के बारे में पढ़ते हैं, जिसने ख़ज़ाने में बहुत थोड़ी-सी रक़म डाली। इसके बावजूद, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह उसकी इस ज़क़ात से अमीरों की ज़क़ात के मुक़ाबले ज़्यादा ख़ुश हुए। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के लिए देने की नियत, दी गई रक़म से ज़्यादा अहम थी। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया, "इस ग़रीब बेवा ने सब लोगों से ज़्यादा

ख़ज़ाने में डाला है।” इसका क्या मतलब था? ज़ाहिर है कि अमीर लोगों ने उस बेवा से ज़्यादा पैसा डाला था। लेकिन उस बेवा ने जो कुछ उसके पास था, सब दे दिया। ख़ुदा को हमारे पैसों की ज़रूरत नहीं है। वह चाहता है कि हम क़ुर्बानी के साथ दें और उस पर भरोसा रखें कि वह हमारी ज़रूरतें पूरी करेगा। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उस औरत के दिल को देखा और अपने शागिर्दों को बुलाकर उसकी क़ुर्बानी की तरफ़ इशारा करके उसे इज़्ज़त दी।

हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की तहरीरों में यह हुक्म दिया गया था कि ख़ुदा की क़ौम अपनी आमदनी का दसवाँ हिस्सा, यानी उशर (10%), ख़ुदा को दे। इस सबक़ में हम देखते हैं कि कुछ अमीर लोग बहुत-सा पैसा डाल रहे थे, क्योंकि उनके पास बहुत पैसा था। ये अमीर लोग अपना फ़र्ज़ी उशर दे रहे थे। लेकिन यह क़ुर्बानी के साथ दी गयी ज़क़ात नहीं थी। हालाँकि वे बहुत दे रहे थे, मगर उनके लिए यह आसान था, क्योंकि उन्हें उस पैसे की ज़रूरत नहीं थी।

इसके बरअक्स, ग़रीब बेवा ने क़ुर्बानी के साथ दिया। उसके पास बहुत कम था, फिर भी उसने जो कुछ उसके पास था, सब ख़ुदा को दे दिया। यह क़ुर्बानी वाली ज़क़ात थी, क्योंकि उसे ज़िंदगी गुज़ारने के लिए उस पैसे की ज़रूरत थी। इस ग़रीब औरत ने ख़ुदा पर पूरा भरोसा किया और जो कुछ उसके पास था, उसे उसे सौंप दिया।

कभी-कभी मैं सुनता हूँ कि सिर्फ़ अमीरों को ही ख़ुदा के काम के लिए देना चाहिए। लेकिन हक़ीक़त यह है कि देना रक़म से ज़्यादा देने वाले के दिल से ताल्लुक़ रखता है। जब हम ख़ुदा के काम के लिए माली तौर पर देते हैं, तो हमारा ईमान बढ़ता है। हम अपने पैसों के मामले में ख़ुदा पर भरोसा करते हैं कि वह आगे भी हमारी ज़रूरतें पूरी करता रहेगा। मैं आपको दावत देता हूँ कि आप ख़ुदा के काम के लिए फ़राख़दिली से देना शुरू करें और इस बात की उम्मीद रखें कि ख़ुदा आपकी ज़रूरतें पूरी करेगा। देने की सबसे मुनासिब जगह आपकी जमाअत है। फिर आपकी जमाअत को मिलकर दुआ करनी चाहिए और ख़ुदा से पूछना चाहिए कि वह इन पैसों को किस तरह इस्तेमाल करना चाहता है, जो वह मुहैया करा रहा है।

इस वाक़िये को पढ़कर, हमें हिर्स यानी लालच के गुनाह की याद आती है, हालाँकि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने अमीरों पर सीधे तौर पर इसका इल्ज़ाम नहीं लगाया। आज के मुआशरे में लालच एक आम गुनाह है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि कोई भी अपने पास जो है, उससे मुतमइन यानी खुश नहीं है। अमीर और ज़्यादा अमीर बनना चाहते हैं, और ग़रीब पैसे को हासिल करना ही ज़िंदगी का सबसे बड़ा मक़सद बना लेते हैं। लेकिन ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें ख़बरदार किया कि हम दो नावों पर सवार नहीं हो सकते। हम एक साथ पैसा और ख़ुदा दोनों की इबादत नहीं कर सकते। हमें अपनी ज़रूरतों के लिए मेहनत करनी चाहिए और अपने ख़ानदान का ख़्याल रखना चाहिए, लेकिन लालच से बचना ज़रूरी है। लालच तब पैदा होता है जब हम ख़ुदा से ज़्यादा, पैसे के पीछे भागते हैं। अगर आपके दिल में लालच है, तो इस वाक़िये में, ग़रीब बेवा की मिसाल पर चलिए! आज अपने दिल का जाइज़ा लीजिए।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने यह नहीं कहा कि अमीरों ने सिर्फ़ अपना उशर देकर गुनाह किया। लेकिन उन्होंने ग़रीब बेवा को हमारे लिए एक नमूना बनाकर पेश किया। हालाँकि वह ग़रीब थी और शायद उसका ख़्याल रखने वाला कोई भी नहीं था, फिर भी इस औरत ने ख़ुदा पर भरोसा किया और जो कुछ उसके पास था, सब उसे दे दिया। उसके ईमान और क़ुर्बानी के साथ दी गई ज़क़ात की वजह से, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उसकी तारीफ़ की।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरोकार होने के नाते, हमें फ़राख़दिली से देना चाहिए। बराये मेहरबानी इसे अपनी आदत बना लें कि आप अपने आसपास के लोगों के साथ सख़ावत यानी खुले दिल से पेश आएँ। आपकी जमाअत को भी ज़क़ात जमा करनी चाहिए। फिर आपकी जमात को मिलकर दुआ करनी चाहिए कि ख़ुदा की रहनुमाई में इन पैसों का सबसे बेहतर इस्तेमाल कैसे किया जाए। आम तौर पर, ये पैसे ख़ुदा की बादशाहत को आगे बढ़ाने या ग़रीबों की मदद करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। अपनी जमात के लिए दिल खोलकर ज़क़ात दीजिए।

सबक - 16

जमात कैसे और क्यों कायम करना ज़रूरी है?

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हर पैरौकार को किसी **जमात** का हिस्सा होना चाहिए। जमात से मेरा मतलब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरौकारों का वह गिरोह है जो हफ़्ते में कम अज़ कम एक बार इकट्ठा होकर दुआ करते हैं, किताब-ए-मुक़द्दस की तालीम हासिल करते हैं, इबादत करते हैं और इशा-ए-**रब्बानी** में शरीक होते हैं। जमातों को कभी-कभी **कलीसिया** भी कहा जाता है।

इंजील-ए-शरीफ़ में आम तौर पर जमात की क़ियादत एक या एक से ज़्यादा **बुज़ुर्गों** के हाथ में होती है, जिन्हें कभी-कभी **पास्टर** भी कहा जाता है। आम तौर पर यही बुज़ुर्ग जमात की रहनुमाई करते हैं और कलाम-ए-ख़ुदा की तालीम देते हैं। लेकिन जमात का हर ईमान वाला शख़्स इस ज़िम्मेदारी में शरीक है कि वह जाए और **शागिर्द बनाए**।

अक्सर जब कोई नई जमात शुरू होती है, तो उसमें कोई ऐसा बुज़ुर्ग मौजूद नहीं होता जो जमात की क़ियादत के लिए तरबियत-याफ़्ता यानी जो क़ियादत को सीखा हुआ हो।

फ़िक्र ना कीजिए, यह एक मामूल की बात है। नई जमातें अक्सर कुछ वक्त तक बिना तरबियत-याफ़्ता रहनुमा के इकट्ठा होती हैं, लेकिन वक़्त के साथ यह आम बात है कि एक या एक से ज़्यादा बुज़ुर्ग जमात के लिए तैयार किए जाएँ।

आज हम इंजील-ए-शरीफ़ में बयान की गई **पहली जमात** के बारे में सीखेंगे। जब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह सलीब पर क़ुरबान हुए, दफ़्न किए गए और फिर मुर्दों में से जी उठे, तो इंजील-ए-शरीफ़ हमें बताती है कि वह चालीस दिन तक अपने क़रीबी शागिर्दों से मिलते रहे और उन्हें **ख़ुदा की बादशाही** के बारे में तालीम देते रहे। उन्होंने उन्हें यह हुक्म दिया: 'लेकिन तुम्हें रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत मिलेगी जो तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यरूशलम, पूरे यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इंतहा तक मेरे गवाह होगे।" ' (आमाल 1:8)

इसके बाद ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह फिर से आसमान पर चले गए। फिर उन्होंने अपने क़रीबी शागिर्दों पर रूह-उल-क़ुद्स की क़ुदरत नाज़िल की, जिनमें एक शख़्स **रसूल पतरस** (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी थे। जब रूह-उल-क़ुद्स रसूल पतरस (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर नाज़िल हुआ, तो उन्हें बहुत से लोगों के सामने ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का पैग़ाम बयान करने का मौक़ा मिला। इसके नतीजे में तीन हज़ार अफ़राद ने बपतिस्मा यानी पाक गुस्ल लिया और **पहली जमात** की बुनियाद पड़ी।

अब इंजील-ए-शरीफ़ में **रसूलों के आमाल 2:37-47** से, वह वाक़िआ बयान किया गया है जो कुछ इस तरह है...

37पतरस की यह बातें सुनकर लोगों के दिल छिद गए। उन्होंने पतरस और बाक़ी रसूलों से पूछा, "भाइयो, फिर हम क्या करें?"

38पतरस ने जवाब दिया, "आपमें से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी।

39क्योंकि यह देने का वादा आपसे और आपके बच्चों से किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं, उन सबसे जिन्हें रब हमारा ख़ुदा अपने पास बुलाएगा।"

40पतरस ने मज़ीद बहुत-सी बातों से उन्हें नसीहत की और समझाया कि "इस टेढ़ी नसल से निकलकर नजात पाएँ।"

41जिन्होंने पतरस की बात क़बूल की उनका बपतिस्मा हुआ। यों उस दिन जमात में तक़रीबन 3,000 अफ़राद का इज़ाफ़ा हुआ।

42यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे।

43सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़ से बहुत-से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए गए।

44जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह जमा होते थे। उनकी हर चीज़ मुश्तरका होती थी।

45अपनी मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके उन्होंने हर एक को उस की ज़रूरत के मुताबिक़ दिया।

46रोज़ाना वह यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस में जमा होते रहे। साथ साथ वह मसीह की याद में अपने घरों में रोटी तोड़ते, बड़ी ख़ुशी और सादगी से रिफ़ाक़ती खाना खाते

47और अल्लाह की तमजीद करते रहे। उस वक़्त वह तमाम लोगों के मंज़ूरे-नज़र थे। और ख़ुदावंद रोज़ बरोज़ जमात में नजातयाफ़्ता लोगों का इज़ाफ़ा करता रहा।

अगर हम यह जानना चाहते हैं कि **इंजील-ए-शरीफ़** जमात के बारे में क्या तालीम देती है, तो बेहतर है कि हम **पहली जमात** के वाकिये को पढ़ें और समझें। आइए, इस हिस्से से जमात के पाँच पहलुओं पर ग़ौर करें।

पहला, हम देखते हैं कि जमात का हिस्सा बनने के लिए लोगों को **तौबा करना**, **ईमान लाना** और **बपतिस्मा यानी पाक गुस्ल लेना** ज़रूरी था। हक़ीक़त में, जमात उन बपतिस्मा-याफ़्ता पैरौकारों का गिरोह है जिन्होंने मिलकर यह फ़ैसला किया हो कि वे बाक़ायदा इख़लास यानी सच्चे मन के साथ जमा होगें, आपस में रिफ़ाक़त रखेंगे और मिलकर ख़ुदा की ख़िदमत करेंगे। अगर आपने ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी का फ़ैसला किया है, तो आपको किसी जमात का हिस्सा होना चाहिए।

दूसरा, जमात की रोज़मर्रा के फराइज़ वही हैं जो मसीह के **आठ अहकाम** हैं, जिनका हम पहले मुताला कर चुके हैं। जमात को चाहिए कि वह ये तमाम काम मिलकर करे और एक-दूसरे की मदद करे ताकि सब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी में मज़बूत रहें।

पहला हुक्म है **तौबा करना और ईमान लाना**।

दूसरा हुक्म है **बपतिस्मा लेना यानी पाक गुस्ल लेना**।

हम ये दोनों अहकाम **आयत 38** में देखते हैं, जहाँ **रसूल पतरस** (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हुक्म दिया: "आपमें से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। "

तीसरा हुक्म है **दुआ करना**। हम पढ़ते हैं कि यह पहली जमात मिलकर दुआ करने में मशग़ूल रहती थी।

चौथा हुक्म है **किताब-ए-मुक़द्दस का मुताला**। इस हिस्से में हम देखते हैं कि नए ईमान वाले **रसूलों की तालीम** से जुड़े रहे।

पाँचवाँ हुक्म है **जाओ और शागिर्द बनाओ**। यह वाकिया इस बात पर ख़त्म होता है कि ख़ुदा हर रोज़ नजात पाने वालों को जमात में शामिल करता था। इसका मतलब यह है कि जमात के लोग ईमानदारी से दूसरों को ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का पैग़ाम सुना रहे थे।

छठा हुक्म है **दूसरों से मुहब्बत करना**। पहली जमात आपस में रिफ़ाक़त रखती थी और अपनी मिल्कियत यानी माल व दौलत बेचकर ज़रूरतमंदों में तक़सीम करती थी, ताकि उनमें कोई मोहताज न रहे। इसी तरह आज भी जमात के हर शख़्स को चाहिए कि वह दूसरे लोगो की मदद करे।

सातवाँ हुक्म है इशा-ए-**रब्बानी लेना**। इस वाकिये में दो मर्तबा "रोटी तोड़ने" का ज़िक्र आता है। रोटी तोड़ने से मुराद यह है कि पहली जमात बाक़ायदा मिलकर इशा-ए-रब्बानी में शरीक होती थी।

आठवाँ हुक्म है **देना**। इस हिस्से में हम देखते हैं कि ईमानदारों ने अपनी मिल्कियत यानी माल व दौलत तक बेच दी और बड़ी फ़राख़दिली से दूसरों की ज़रूरतें पूरी कीं। जमात के लोग जमात के लिए दिल खोलकर देते हैं।

इस तरह, जमात उन ईमानदारों का गिरोह है जो मिलकर **आठों अहकाम** पर अमल करते हैं और एक-दूसरे की मदद करते हैं ताकि सब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी में क़ायम रहें।

इस हिस्से में जमात का **तीसरा पहलू** यह है कि जमात **किसी भी वक़्त** जमा हो सकती है। यहाँ हम देखते हैं कि जमात रोज़ाना मिलती थी। इसका मतलब यह है कि जमात मंगल के दिन, जुमा के दिन या इतवार के दिन भी मिल सकती है। कोई ख़ास वक़्त मुक़र्रर नहीं है। जमात को चाहिए कि वह कम अज़ कम हफ़्ते में एक मर्तबा इबादत, दुआ, किताब-ए-मुक़द्दस के मुताले और आपसी हौसला-अफ़ज़ाई के लिए जमा हो।

चौथा पहलू यह है कि जमात **किसी भी जगह** जमा हो सकती है। इस हिस्से में जमात घरों में भी जमा होती थी और बैतुल मुकद्दस में भी। इसका मतलब यह है कि जमात किसी ख़ास इमारत में भी इबादत कर सकती है, लेकिन अक्सर जमातें घरों में ही मिलती हैं। जमात के तौर पर यह तय करें कि आप बाक़ायदा कहाँ जमा हो सकते हैं।

पाँचवाँ पहलू यह है कि जमात **ख़ुदा के जलाल के लिए उसकी इबादत** करती है। इस हिस्से में ख़ुदा की हम्द करने से मुराद इबादत के गीत गाना है। यह बिल्कुल मामूल की बात है कि जमात इकट्ठा होकर क़ादिर-ए-मुतलक़ की सना में गीत गाए।

मेरी दुआ है कि ख़ुदा आपको भी ऐसी ही जमात का हिस्सा बनने का मौक़ा दे, जैसी जमात का यहाँ ज़िक्र किया गया है। अगर आपके पास कोई जमात मौजूद नहीं है, तो अपने दोस्तों और ख़ानदान वालों के साथ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह का पैग़ाम बताए। मुमकिन है कि आप मिलकर एक नई जमात शुरू कर सकें।

सबक - 17

इंजील शरीफ में कोई तब्दीली यानी बदलाव नहीं हुआ।

आज कुछ लोग यह कहते हैं कि **इंजील-ए-शरीफ़** में तब्दीली कर दी गई है या वह मंसूख हो चुकी है। **अस्तग़फ़िरुल्लाह!** इंजील-ए-शरीफ़ के बारे में ऐसा बयान देना बिल्कुल गैर-मुनासिब है।

इंजील-ए-शरीफ़ में तब्दीली मुमकिन ही नहीं, क्योंकि **क़ादिर-ए-मुतलक़** अपनी किताबों की ख़ुद हिफ़ाज़त करता है। ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया। यक़ीनन, अगर वह यह कर सकता है, तो वह अपनी किताबों की हिफ़ाज़त भी कर सकता है। **हज़रत ईसा अल-मसीह** ने फ़रमाया था: "आसमान और ज़मीन टल जाएँगे, मगर मेरे कलाम कभी टलने वाले नहीं।"

कभी-कभी मैं लोगों से पूछता हूँ, "आख़िर इंजील-ए-शरीफ़ को किसने बदला?" आम तौर पर जवाब यह मिलता है कि **हज़रत ईसा अल-मसीह** के पैरौकारों ने इसे बदल दिया। ऐसा कहना बे-बुनियाद और नादानी की बात है। अगर कोई यह कहे कि हज़रत ईसा अल-मसीह के पैरौकारों ने ख़ुदा की किताब को बदल दिया, तो इसका मतलब यह होगा कि वे लोग **अल्लाह** से ज़्यादा ताक़तवर हैं। क्योंकि अल्लाह की किताब को उसके हाथों से छीनकर तब्दील करने के लिए अल्लाह से ज़्यादा ताक़त चाहिए।

कभी-कभी मैं यह भी पूछता हूँ, "आख़िर यह तब्दीली कब हुई?" इस सवाल का कोई तसल्ली-बख़्श यानी मुतमईन कर देने वाला जवाब मौजूद नहीं है। अगर कोई कहे कि यह किताबें क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले ही तब्दील हो चुकी थीं, तो फिर क़ुरआन ग़लत गवाही देता है, क्योंकि क़ुरआन ख़ुद गवाही देता है कि **इंजील-ए-शरीफ़ अल्लाह की किताब है**। क़ुरआन में सैकड़ों बार यह बयान मिलता है कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से नाज़िल की गई एक अच्छी किताब है।

लेकिन अगर कोई यह दावा करे कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ुरआन के नाज़िल होने के बाद बदली गई, तो तारीख़ इस दावे को रद्द कर देती है। इंजील-ए-शरीफ़ की हज़ारों क़दीम मख़्तूतात यानी **क़दीम नुस्ख़े** मौजूद हैं, जिनमें से कई क़ुरआन से भी पहले के हैं। जब इन क़दीम नुस्ख़ों का आपस में मुक़ाबला किया जाता है, तो साफ़ ज़ाहिर होता है कि इंजील-ए-शरीफ़ में कोई तब्दीली नहीं हुई। आज हमारे पास जो इंजील-ए-शरीफ़ मौजूद है, वही उन क़दीम नुस्ख़ों के मुताबिक़ है।

लेकिन जो लोग क़ुरआन को मानते हैं, उनके लिए मैं क़ुरआन की दो तीन आयात पेश करना चाहता हूँ, जो साफ़ तौर पर इस बात की तस्दीक़ करती हैं कि इंजील-ए-शरीफ़ अल्लाह की तरफ़ से है।

सूरह यूनुस, जो दसवीं सूरह है, उसकी **आयत 94** क़ुरआन के लिए एक इम्तिहान पेश करती है। इसमें फ़रमाया गया है:

"अगर तुम उस चीज़ के बारे में शक में हो जो हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है, तो उनसे पूछो जो तुमसे पहले किताब पढ़ते चले आ रहे हैं। बेशक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ तुम्हारे पास आ चुका है, पस शक करने वालों में से न बनो।"

इस आयत में क़ुरआन यह तस्लीम यानी क़बूल करता है कि अगर किसी को क़ुरआन या उसकी तालीम के बारे में शक हो, तो उसे पहले की किताबें पढ़ने वालों से पूछना चाहिए — यानी **तौरात**, **ज़बूर** और **इंजील-ए-शरीफ़** के मानने वालों से। इस तरह क़ुरआन ख़ुद अपने लिए यह क़ायदा मुक़र्रर करता है कि उसकी तालीम पहले की किताबों के मुताबिक़ होनी चाहिए। इस तरह क़ुरआन इस बात की तस्दीक़ करता है कि इंजील-ए-शरीफ़ **कलाम-ए-अल्लाह** है।

अब मैं क़ुरआन की एक और आयत पेश करता हूँ। **सूरह अल-माइदा**, जो पाँचवीं सूरह है, उसकी **आयत 46** में फ़रमाया गया है:

"और हमने उनके नक़्शे-क़दम पर ईसा इब्न-ए-मरयम को भेजा, जो तौरात की तस्दीक़ करने वाले थे जो उनसे पहले नाज़िल हुई थी। और हमने उन्हें इंजील अता की, जिसमें हिदायत और नूर है, और वह तौरात की तस्दीक़ करने वाली है जो उससे पहले नाज़िल हुई थी, और अल्लाह से डरने वालों के लिए हिदायत और नसीहत है। और इंजील वालों को चाहिए कि जो कुछ अल्लाह ने उसमें नाज़िल किया है, उसके मुताबिक़ फ़ैसला करें।"

क़ुरआन गवाही देता है कि **हज़रत ईसा अल-मसीह** को **हज़रत मूसा** (अलैहिस्सलाम) के बाद भेजा गया, यानी उनकी किताबें और तालीमात आपस में एक जैसी हैं। इसी वजह से हज़रत ईसा अल-मसीह के पैरौकार सिर्फ़ एक किताब नहीं, बल्कि **तौरात, ज़बूर और इंजील-ए-शरीफ़** तीनों को पढ़ते हैं।

क़ुरआन की यह आयत यह भी बयान करती है कि इंजील-ए-शरीफ़ हमारी रूहानी ज़िंदगी के लिए **हिदायत और नूर** है। यक़ीनन, क़ुरआन इंजील-ए-शरीफ़ को बहुत बड़ा एहतिराम और अज़मत अता करता है।

क़ुरआन में सौ से ज़्यादा आयात मौजूद हैं जो इस हक़ीक़त की गवाही देती हैं कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से एक अच्छी किताब है। लेकिन क़ुरआन की कोई भी आयत यह नहीं कहती कि तौरात, ज़बूर या इंजील-ए-शरीफ़ में तब्दीली हो चुकी है। फिर यह शरारत-आमेज़ ख़याल कहाँ से आया? अगर यह किताबों से नहीं आया, तो फिर यह इंसानों की सोच का नतीजा है।

अब सवाल यह है कि अगर मुक़द्दस किताबें एक बात कहें और इंसान दूसरी बात बताएँ, तो हमें किसकी बात माननी चाहिए? मेरे नज़दीक यह ख़याल, कि इंजील-ए-शरीफ़ बदल दी गई है, ख़ुदा की तरफ़ से नहीं बल्कि इंसानों की तरफ़ से है। इसलिए इस ख़याल को पूरी तरह रद्द कर देना चाहिए।

दरहक़ीक़त, यह **इब्लीस** की चाल है कि वह लोगों को यह यक़ीन दिलाए, कि इंजील-ए-शरीफ़ बदल दी गई है। **शैतान** चाहता है कि लोग इंजील-ए-शरीफ़ की क़ुदरत, ख़ूबसूरती और हक़ीक़त से महरूम रहें। इन झूटों को रद्द कीजिए और क़ादिर-ए-मुतलक़ की इस सच्ची वही की क़ुदरत और जमाल को ख़ुद आकर देखिए।

सबक - 18

इंजील-ए-शरीफ़ की तारीख़

पिछले सबक़ में, हमने यह सीखा कि **इंजील-ए-शरीफ़** में कोई तब्दीली नहीं की गई है। यह **शैतान** की तरफ से फैलाया हुआ झूट है कि क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से नाज़िल की गई इस ख़ूबसूरत किताब को बदल दिया गया है या मंसूख किया गया है। जैसा कि **हज़रत ईसा अल-मसीह** ने इंजील-ए-मत्ती 24:35 में फ़रमाया: "आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी। '

यह सबक़, हमें इंजील-ए-शरीफ़ की तारीख़ और उसके मज़ामीन के बारे में ज़्यादा मालूमात देता है।

ख़ुदा ने **रूह-उल-क़ुद्स** के ज़रिये **हज़रत ईसा अल-मसीह** के **रसूलों** के वसीले से इंजील-ए-शरीफ़ को नाज़िल फ़रमाया। ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल की गई इंजील-ए-शरीफ़ सबसे पहले **यूनानी ज़बान** में लिखी गई। आज भी बहुत से लोग इसे यूनानी ज़बान में पढ़ते हैं और उसका मुताला करते हैं।

बेशक़, कुछ लोगों को इंजील-ए-शरीफ़ के बारे में इस वजह से इश्तिबाह यानी शक हुआ है कि इसका तर्जुमा बहुत सी दूसरी ज़बानों में किया गया है। लेकिन जब किसी किताब का तर्जुमा किया जाता है, तो असल ज़बान में मौजूद मज़मून हरगिज़ नहीं बदलता। इंजील-ए-शरीफ़ के यूनानी नुस्ख़े में कोई तब्दीली नहीं हुई है।

इंजील-ए-शरीफ़ के **सत्ताईस हिस्से** हैं, जिन्हें हम किताबें कहते हैं। पहले चार हिस्से **चार इंजीलों** पर मुश्तमिल हैं, जो हज़रत ईसा अल-मसीह की ज़िंदगी और उनकी तालीमात का बयान पेश करते हैं। ये हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में चार चश्मदीद गवाहियाँ हैं, जिन्हें **हज़रत मत्ती, मरक़ुस, लूक़ा और यूहन्ना** (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने तहरीर किया।

कुछ लोग इस बात पर उलझन का शिकार हो जाते हैं कि चार इंजीलें क्यों हैं। क़ादिर-ए-मुतलक़ ने चार इंजीलें इस लिए अता की हैं कि ये इंजील-ए-शरीफ़ की सच्चाई के चार गवाह हैं। अदालत में अक्सर एक ही गवाही क़ाबिले-क़बूल नहीं मानी जाती, लेकिन जब चार ईमानदार आदमी एक साथ गवाही दें, तो वह गवाही साबित हो जाती है। इसी तरह ख़ुदा ने अपने रहम में चार गवाहियाँ दी हैं, ताकि हम हज़रत ईसा अल-मसीह की सच्चाई के बारे में पूरा यक़ीन रख सकें।

चार इंजीलों के बाद **रसूलों के आमाल** की किताब आती है। "Apostles" अंग्रेज़ी लफ़्ज़ है, जिसका मतलब **रसूल** है। यह किताब इस बात की गवाही देती है कि कैसे हज़रत ईसा अल-मसीह आसमान पर उठा लिए गए और फिर अपने काम को जारी रखने के लिए रूह-उल-क़ुद्स को अपने रसूलों पर नाज़िल किया।

इसके बाद आने वाली **इक्कीस किताबें** रसूलों के वो इल्हामी ख़तूत हैं जो उन्होंने हज़रत ईसा अल-मसीह के इब्तिदाई पैरौकारों को लिखे। ये तमाम लोग हज़रत ईसा अल-मसीह की क़ियामत के चश्मदीद गवाह थे। जो कुछ उन्होंने लिखा, उसमें रूह-उल-क़ुद्स उनकी रहनुमाई कर रहा था। **रसूल पतरस** (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने **दूसरा पतरस 1:20–21** में इसके बारे में लिखा: "किताब-ए-मुक़द्दस की कोई नुबूवत नबी की अपनी ताबीर से नहीं होती, क्योंकि कोई नुबूवत इंसानी मरज़ी से नहीं आई, बल्कि इंसान रूह-उल-क़ुद्स की हिदायत से ख़ुदा की तरफ़ से बोलते रहे।"

इंजील-ए-शरीफ़ की यह आयत गवाही देती है कि किस तरह ख़ुदा ने रसूलों की रहनुमाई की और उन्हें कलाम-ए-ख़ुदा लिखने के लिए क़ायम किया। इंजील-ए-शरीफ़ की आख़िरी किताब को **मुकाशफ़ा** कहा जाता है, जो **यौम-ए-हिसाब** के बारे में गवाही देती है।

कुछ लोगों ने इंजील-ए-शरीफ़ के इन हिस्सों पर एतराज़ किया है और यह कहा है कि यह उनकी तवक़्क़ोआत से मुख़्तलिफ़ हैं। वे कहते हैं कि इंजील एक ही किताब होनी चाहिए थी जो सीधे हज़रत ईसा अल-मसीह पर नाज़िल हुई हो। लेकिन हक़ीक़त यह है कि इंजील-ए-शरीफ़ शुरू से ही इन सत्ताईस किताबों पर मुश्तमिल रही है। यह रूह-उल-क़ुद्स की वह गवाही है जो रसूलों के ज़रिये हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में दी गई।

आज इंजील-ए-शरीफ़ की तक़रीबन **5,800 क़दीम यूनानी नुस्ख़ें** मौजूद हैं, और इसके अलावा **15,000** से ज़्यादा दूसरी क़दीम नुस्ख़ें और हवाले पाए जाते हैं। इन तमाम क़दीम नुस्ख़ें में यही सत्ताईस किताबें मौजूद हैं। इनमें से बहुत सी नुस्ख़ें क़ुरआन से भी काफ़ी पहले की हैं। ये नुस्ख़ें क़ुरआन के आने से पहले भी वही थीं और उसके बाद भी वही रहीं।

पिछले सबक से, याद रखिए कि क़ुरआन कम अज़ कम सौ मर्तबा इस बात की गवाही देता है कि इंजील-ए-शरीफ़ **कलाम-ए-ख़ुदा** है। क़ुरआन उसी इंजील-ए-शरीफ़ की मौजूदगी की गवाही देता है जो सत्ताईस किताबों पर मुश्तमिल है और जो क़ुरआन से पहले मौजूद थी।

इंजील-ए-शरीफ़ की सबसे मशहूर क़दीम नुस्खों में से एक को **कोडेक्स सीनाइटिकस** कहा जाता है, जिसे तक़रीबन **300 ईस्वी** में नक़ल किया गया था और आज यह **ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन** में मौजूद है। एक और क़दीम नुस्ख़े **कोडेक्स वेटिकानस** है, जो तक़रीबन उसी दौर की है और **वेटिकन लाइब्रेरी, रोम** में रखी गई है।

मेरा मक़सद यह है कि आज भी ऐसी तक़रीबन 5,800 क़दीम नुस्ख़ें मौजूद हैं। हमें उन तक रसाई हासिल है और हम उनका मुताला करते हैं। मैंने ख़ुद इन हाथ से लिखे हुए नुस्ख़ों की तस्वीरों का मुताला किया है। आप भी इन तमाम नुस्ख़ों के हर सफ़हे की तस्वीरें इंटरनेट पर देख सकते हैं। बस “The Center for the Study of New Testament Manuscripts” तलाश कीजिए, या सीधे **www.csntm.org** पर जाइए।

याद रखिए, क़ुरआन **सूरह यूनुस**, जो दसवीं सूरह है, उसकी **आयत 94** में फ़रमाता है:

“अगर तुम उस चीज़ के बारे में शक में हो जो हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है, तो उनसे पूछो जो तुमसे पहले किताब पढ़ते चले आ रहे हैं। बेशक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ तुम्हारे पास आ चुका है, पस शक करने वालों में से न बनो।”

क़ुरआन हमें दावत देता है कि हम पहले की किताबों — यानी **तौरात, ज़बूर और इंजील-ए-शरीफ़** — की तालीमात की तहक़ीक़ करें। इंजील-ए-शरीफ़ में कोई तब्दीली नहीं की गई है। आज भी वह वैसी ही है जैसी शुरू में नाज़िल की गई थी। मेहरबानी करके अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल की गई इस ज़बरदस्त और बामक़सद वही को पढ़िए और उसकी तहक़ीक़ कीजिए।